KKR/182/2019-2021

RNI No. HARHIN/2012/49148

www.hamarabhumandal.com

हमारा भूमंडल

वर्ष : 9 अंक: 07 जुलाई, 2020 पर्यावरण एवं जन-स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका ₹ 100/-

अस्पतालों के बिस्तरों से भी फ़ैल सकता है कोविड-19 वायरस का संक्रमण

हाथ नहीं धोए हैं क्या?

सावधान, कोरोनावायरस के रोगाणु भी जा सकते हैं आप के शरीर में!

तालाब, पोखर, जंगल, पहाड़, पर्वत आदि हैं प्रकृति के उपहार

LOW Gi.
مؤشر نسبة السكر المنخفض

Maharani®

Parboiled Basmati Rice • أرز سيلا بسمتي

أرز مناسب لمرض السكري

Rice Suitable for Diabetics

أرزكم المفضل

YOUR FAVORITE PRODUCT

Rice Plus

أرز مناسب لمرض السكري

Rice Suitable for Diabetics

Chaman Lal Setia Exports Ltd.

(A Govt. Recognized Star Export House with ISO 22000 : 2005 Certification)

Works & Processing Unit:

Kaithal Road, Near Central School, Karnal-132001 (Haryana) INDIA, Fax: +91-184-2291067

Email: begum@futurerice.com; maharanirice@airtelmail.in , Visit us at: www.maharanirice.co.in

E-mail : hamarabhumandal@gmail.com www.hamarabhumandal.com

हमारा भूमंडल

वर्ष : 9 अंक: 07 जुलाई, 2020

सम्पादकीय परामर्श :

प्रो. प्रदीप माथुर, पूर्व अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली. मोबाइल - 9810387757

श्री सुरेन्द्र कुमार, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली. मोबाइल - 9868072940, 9810802924

सम्पादक एवं प्रकाशक :

जगदीश चन्द्र कौशिक, मोबाइल- **+91-9416036002, 7506008274**

सज्जा एवं ग्राफिक्स : हिमांशु शर्मा 92163 24942

सम्पादकीय कार्यालय :

30, सेक्टर-13, अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्र - 136 118 (हरियाणा)
मोबाइल -**+91-9416036002, 7506008274**
फैक्स : 01744-222869

विकास एवं विस्तार :

श्री तरुण बतरा 1085, सेक्टर-6, अर्बन इस्टेट, **करनाल,** मोबाइल - 9416202010, 9729870010

क्षेत्रीय कार्यालय :

चण्डीगढ़ :

श्री उपकार सिंह एस.सी.ओ.-46, द्वितीय तल, सेक्टर-20 सी, **चण्डीगढ़ - 160 020**
फोन : 0172-2722014, 3012011
फैक्स : 0172-5070704, मोबाइल - 09814069404

जम्मू :

प्रदुम्न गन्जू 64, अमर विहार, गोल गुजराल, तालाब तिल्लू, **जम्मू - 180 002**
फोन : 0191-2504366, मोबाइल-09419112339

शिमला :

एच. आनंद. शर्मा धाल्यु, नजदीक आई.एस.बी.टी., **शिमला - 171 004**
फोन : 0177-2814335, मोबाइल - 9418814335

दिल्ली :

श्री आर.के. गौतम 21/12, ग्राउंड फ्लोर, शक्ति नगर, **दिल्ली - 110 007**
फोन : 011-23840245, मोबाइल - 9654649307

लखनऊ :

निरंकार सिंह ए-13/6, पार्क रोड़ कालोनी, **लखनऊ - 222 601 (उ.प्र.)**
मोबाइल : 09451910615, 9807179204

देहरादून :

ऋषभ पुंडीर 152, ब्लॉक-2, करणपुर, **देहरादून (उत्तरांचल) - 248 001**
मोबाइल - 09927064893

जयपुर :

सुनील कुमार वर्मा 27, पटेल नगर, झोटवाड़ा, **जयपुर (राजस्थान)**
मोबाइल - 09214455539, 09829244439

मुम्बई :

गौरव कौशिक बी-404, लक्ष्मी कॉम्पलैक्स, वर्तक नगर, **थाणे (पश्चिम) - 400 606**
फोन : 22-25853131, मोबाइल - 09167576453

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी एवं संपादक जगदीश चन्द्र कौशिक द्वारा 'हमारा भूमण्डल' पत्रिका मकान नं. 30, सेक्टर-13, अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्र से प्रकाशित एवं एंकर प्रिंटिंग प्रेस, साधु मण्डी, नजदीक डाकघर, पिपली रोड़, कुरुक्षेत्र-136118 से छपवा कर अपने कार्यालय मकान नं. 30, सेक्टर-13, अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्र से मुद्रित की गई।

©

'जन-शक्ति' नामक स्वयंसेवी संस्था के अन्तर्गत प्रकाशित **'हमारा भूमण्डल'** का यह विशेषांक **'देश का पर्यावरण - जनमानस की राय'** पर आधारित है। हमारा भूमण्डल **भारतीय समाचार-पत्रों के पंजीयक के कार्यालय से पंजीकरण संख्या HARHIN/2012/49148** के तहत पंजीकृत एक मासिक पत्रिका है। पत्रिका में प्रकाशित तमाम लेख मौलिक एवं अप्रकाशित हैं एवं इनके सर्वाधिकार तथा कॉपीराइट **'हमारा भूमण्डल'** तथा **'जन-शक्ति'** के पास सुरक्षित है। अतः पत्रिका में छपे किसी भी लेख के पुनः प्रकाशन एवं अन्य उपयोग के लिए पत्रिका से अनुमति लेनी अनिवार्य है। पूर्व लिखित अनुमति के बिना पूर्ण या आंशिक तौर पर ली गई सामग्री का किसी भी रुप में प्रयोग एवं प्रकाशन अवांछनीय एवं प्रतिबंधित है।

वार्षिक-शुल्क : ₹ 1100 | **एक प्रति का मूल्य : ₹ 100**

वार्षिक-शुल्क मनीआर्डर, चैक अथवा बैंक-ड्राफ्ट द्वारा **'हमारा भूमण्डल'** के नाम पर बनाकर कोठी नं. 30, सेक्टर-13, अर्बन इस्टेट, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा) के पते पर भेजा जा सकता है। कृपया कुरुक्षेत्र से बाहर के चैकों में ₹20 अतिरिक्त शुल्क जोड़ कर भेजें।

सम्पादकीय

पर्यावरण-संरक्षण एवं शौचालयों से बढ़ेगी स्वच्छता

गत वर्ष राजधानी दिल्ली एवं इसके निकटवर्ती शहरों में वायु प्रदूषण, धूल और वाष्पकणों के घालमेल से बनी स्मॉग पूरे वातावरण पर छा गई थी। विशेषज्ञों ने इसके लिए हरियाणा, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा पराली एवं दूसरी फसलों के अवशेषों को जलाने से उठे धुंए को उस दमघोटू वायु-प्रदूषण का कारण बताया था। संभवतः उनका दृष्टिकोण और अनुमान ठीक था। सर्वोच्च न्यायालय की पर्यावरण पर गठित श्री भूरेलाल की हाई पावर कमेटी ने तब पंजाब, हरियाणा, दक्षिणी उत्तर प्रदेश एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में कार्यरत प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों के अधिकारियों को निर्देश दिया था कि वे किसानों को पराली एवं अन्य फसलों के अवशेष जलाने से रोकें, पराली जलाने को एक अपराध घोषित करें तथा उन किसानों को प्रोत्साहित करें जो पराली नहीं जलाते हैं। कमेटी ने अधिकारियों को फसलों के अवशेषों का सदुपयोग करने की योजनाएं बनाने के भी निर्देश दिए थे। गौरतलब है कि पंजाब और हरियाणा में तो वर्ष 2009 से ही माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के निर्देश पर इन राज्यों के ब्लॉक स्तर तक पराली न जलाने के लिए अनेक जागरूकता अभियान चलाए गए थे। किसानों को धान की पराली एवं अन्य फसलों के अवशेषों को जलाने से वातावरण में बढ़ते प्रदूषण, धान की पराली जैसे फसलों के अवशेषों के विविध उपयोग कैसे हो जैसे विषयों पर जागरूक किया गया था। इन राज्यों के कई किसानों को तो यहां के प्रदूषण नियन्त्रण बोर्डों ने पराली जलाने के अपराध में दण्डित भी किया था क्योंकि उन्होंने सरकार की अधिघोषणा के बाद भी अपने खेतों में पराली जलाने का अपराध किया था। फिर भी, इन राज्यों में आज भी पराली को निर्बाध रूप से जलाया जा रहा है और प्रदूषण फैलाया जा रहा है। जाहिर है, इन दोनों राज्यों में ऐसे जागरूकता अभियान एक बार फिर से चलाने की जरूरत है।

दूसरी ओर, दिल्ली जैसे बड़े महानगरों में ही नहीं, देश के तमाम औसत दर्जे के शहरों में वाहनों से निकलने वाले धुंए से भी वायु-प्रदूषण में वृद्धि हो रही है जिससे कमोवेश स्मॉग जैसी स्थिति बनी ही रहती है। 'इंडियन फाउंडेशन ऑफ ट्रांसपोर्ट रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग' ने तो यहां तक दावा किया है कि देश के अधिकांश ट्रांसपोर्टर अपने फायदे के लिए तय उत्सर्जन मानकों को दरकिनार करके यहां के शहरों की हवा में ज़हर घोल रहे हैं। फाउंडेशन ने ट्रकों की ओवरलोडिंग की अनदेखी से लेकर दिल्ली में चलाए जा रहे अनेक छोटे वाणिज्यिक वाहनों को सी.एन.जी. में तब्दील न करके उन्हें डीजल से चलाने और नेशनल परमिट धारक ट्रकों को अवैध रूप से दिल्ली में चलाने तक के आरोप भी लगाए हैं। तेजी से बढ़ती शहरीकरण के कारण भी देश में प्रदूषण की रफ्तार बढ़ रही है। अप्रत्याशित दर से बढ़ते शहरों में जनस्वास्थ्य से लेकर स्वच्छ पानी, भोजन, ऊर्जा और सेनिटेशन तक की स्थिति बहुत खराब हो जाती है। शहरों का विस्तार होने से मलिन बस्तियां भी जन्म ले लेती हैं जबकि शहरी रिहायशी इलाकों तक में भीड़ और प्रदूषण बढ़ जाता है।

हमारे राजनेताओं को देश के लोगों के बेहतरीन जीवन एवं गुणवत्ता वाले शहरों और ग्रामीण कस्बों के विकास के लिए बेहतर योजनाएं बनानी चाहिए। हमारे नियामकों को भी सख्ती से नियमों एवं कानूनों को लागू न करने वालों पर कार्रवाई करनी चाहिए। प्रशासन के स्थानीय अधिकारियों और व्यापारियों को नगर नियोजन, जल निकासी, सड़क और परिवहन प्रणाली में सुधार करने तथा रिसाईक्लिंग कार्यक्रमों को लागू करने के साथ-साथ पर्यावरणपरक प्रौद्योगिकी- हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का संकल्प लेना चाहिए। हम सभी जाने-अनजाने भी अपने माहौल को प्रदूषित करते रहते हैं। उदाहरण के लिए सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करके हम न केवल वातावरण में ज़हर घोलते हैं बल्कि पैसिव-स्मोकिंग से दूसरे लोगों को भी उनके न चाहने पर जबरदस्ती धूम्रपान का सैकिण्ड-हैंड धुंआ उन्हें पिलाते रहते हैं। हालांकि इस को रोकने के लिए पांच वर्ष पहले केन्द्र सरकार ने सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने के कृत्य को निषेध करते हुए उसे एक अपराध घोषित कर दिया था। परन्तु फिर भी बहुत से लोग उन लोगों की कतई भी परवाह नहीं करते हैं जो धूम्रपान नहीं करते हैं। ऐसे बहुत से लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर सरेआम धूम्रपान करते देखा जा सकता है। अब समय आ गया है कि हम अपने पर्यावरण की तरह-तरह से फैल रहे प्रदूषणों से रक्षा करने का वचन लें। हमें अपने अथवा अपने परिवार की रक्षा के लिए ही नहीं बल्कि अपनी भावी पीढ़ी के लिए भी प्रदूषण पर रोक लगा कर पर्यावरण की रक्षा करनी होगी

हमारा भूमंडल

वर्ष : 9 अंक: 7 जुलाई, 2020

अनुक्रमाणिका

08

हाथ नहीं धोए हैं क्या?

सावधान, कोरोनावायरस के रोगाणु भी जा सकते हैं आप के शरीर में!

अस्पतालों के बिस्तरों से भी फ़ैल सकता है कोविड-19 वायरस का संक्रमण

26

36

तालाब, पोखर, जंगल, पहाड़, पर्वत आदि हैं प्रकृति के उपहार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

श्री प्रकाश जावडेकर
माननीय केन्द्रीय मंत्री,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार
Tel: 011- 24695132, 24695136, 24695329
Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road,
New Delhi-110003
Tel: 011-24695132, 24695136, 24695329
Email: mefcc@gov.in

श्री बाबुल सुप्रियो
माननीय राज्य मंत्री,
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,
भारत सरकार
Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road,
New Delhi-110003
Tel: 011- 24621921, 24621922

श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्ता, आईएएस (गुजरात-1987)
सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
फ़ोन: 011- 24695262, 24695265,
24695270(F)
ईमेल: secy-moef@nic.in

श्री सिद्धंता दास, आईएफएस (ओड़िसा: 1982)
डाइरेक्टर जनरल ऑफ फारेस्ट (वन
महानिदेशक)और विशेष सचिव
फ़ोन: 011- 24695282, 24695278,
24695412 (F)
ईमेल: dgfindia@nic.in

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, भारत सरकार

श्री शिव दास मीना आई ए एस ,
अध्यक्ष,
केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
टेलीफोन: 011- 43102202
ई-मेल: ccb.cpcb@nic.in

डॉ. प्रशांत गर्गवा
सदस्य सचिव,
केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
टेलीफ़ोन: 011- 22303655, 43102207,
43102428
ई-मेल: mscb.cpcb@nic.in
prashant_gargava@hotmail.com

पर्यावरण एवं वन विभाग हरियाणा सरकार

श्रीमती धीरा खंडेलवाल IAS
Additional Chief Secretary to Govt. Haryana,
Environment Department,
R. No. 108, 7th Floor, Main Secretariat,
Sector-1, Chandigarh
Tel: 0172-2740128
Email: dheera.acs@gmail.com

श्री कंवरपाल सिंह गुर्जर
पर्यावरण मंत्री, हरियाणा सरकार
Room No. 34/8, Secretariat,
Sector-1, Chandigarh
Tel: 0172-2740010,

हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

श्री अशोक खेत्रपाल
Chairman,
Haryana State Pollution Control Board,
C-11, Sector-6. Panchkula-134109,
Haryana
Tel: +91 172-2581005, 2581006
Fax: +91 172 2581201
Email: hspcbho@gmail.com

श्री एस नारायणन, IFS
Member Secretary,
Haryana State Pollution Control Board,
C-11, Sector-6. Panchkula-134109, Haryana
Email: hspcbms@gmail.com
Tel: 0172-2581105(O),
Fax: 0172-2564093

विज्ञान, प्रोद्योगिकी एवं पर्यावरण मंत्रालय, पंजाब सरकार

कैप्टेन अमरिंदर सिंह
Chief Minister
Government of Punjab & Minister In charge
Department of Science, Technology
& Environment,
Room No.1, 2nd Floor, Punjab Civil
Secretariat, Sector - 1, Chandigarh-160001
Tel: 0172-2740325, 2740769, 2743463
Email: cmo@punjab.gov.in

श्री आलोक शेखर श्रीवास्तव, आई ए एस (Punjab 1994)
General Administration & Coordination and in addition Principal Secretary, Science Technology and Environment and in addition Principal Secretary, Parliamentary Affairs, Punjab Civil Secretariat, Sector - 1, Chandigarh-160001, Tel: 0172-2743442, Email:secy.te@punjab.gov.in

पंजाब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

श्री सतविंदर सिंह मरवाहा
Chairman,
Punjab Pollution Control Board,
Vatavaran Bhawan,
Nabha Road, Patiala- 147001
Tel: 0175-2215793
Email: chairman.ptl.ppcb@punjab.gov.in

श्री क्रुनेश गर्ग
Member Secretary,
Punjab Pollution Control Board,
Vatavaran Bhawan,
Nabha Road, Patiala- 147001
Tel: 0175-2215802
Email: msppcb@punjab.gov.in

पर्यावरण मंत्रालय, हिमाचल प्रदेश

श्री जयराम ठाकुर,
Chief Minister,
Himachal Pradesh Government,
E-100, Armsdale Building, Himachal
Pradesh Government Secretariat,
Shimla - 171002, Himachal Pradesh
Tel: 0177-2625400, 2625819, 2624554
Email: cm-hp@nic.in, jr.thakur@nic.in

श्री गोविन्द सिंह ठाकुर
Forest Minister, Himachal Pradesh
Government,
E-212, Armsdale Building, Himachal Pradesh
Government Secretariat,
Shimla - 171002, Himachal Pradesh
Tel: 0177-2621488, 2880748
Mobile: 98160-13202
Email: tptmin-hp@nic.in

श्री रजनीश, आईएएस, (HP-97)
ASecretary (IPR and Environment Sc. & Tech.) to the Govt. of HP + Chairman, HP State Pollution Control Board, Shimla. Him Parivesh, Phase-III,New Shimla 171009. Himachal Pradesh
Mobile: +91 8800300999,
Email: envsecy-hp@nic.in

डा. राज कृशन परूथी, IAS
Member Secretary,
H.P. State Pollution Control Board,
Him Parivesh, Phase-III,
New Shimla-171009. Himachal Pradesh
Tel: 0177 2673766
Mobile: 94184 55298
Email: Email: mspcb-hp@nic.in

चंडीगढ़ प्रशासन

श्री वी. पी. सिंह बदनोर
Hon'able Governor of Punjab & Administrator of U.T. Chandigarh,
Punjab Raj Bhawan, Sector 6,
Chandigarh-160019
Tel: 0172- 2740740(O), 2740608 (R),
Email: admr-chd@nic.in

श्री मनोज कुमार परीदा, IAS
Adviser to the Administrator, U.T. Chandigarh,
Chandigarh Administration Secretariat,
Sector 9, Chandigarh-160009
Tel: 0172- 2740154 (O), 2791140 (R),
Email: adviser-chd@nic.in

चंडीगढ़ प्रदूषण नियंत्रण कमिटी

श्री देबेन्द्रा दलाई, IFS
Director Environment & Chief Conservator of Forests,
Chandigarh Administration,
Paryavaran Bhawan, Sector- 19-B,
(U.T.) Chandigarh--160019
Tel: 0172-2700284
Email: cf-chd@chd.nic.in
ccf.chandigarh@gmail.com

श्री अरुण कुमार गुप्ता, IAS
Principal Secretary, Home & Environment
Chandigarh Administration,
Fourth Floor, UT Secretariat,
Sector-9, Chandigarh-160009
Tel: +91 172 2740008
Email: hs-chd@nic.in

पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह का सन्देश

प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर सख्ती से पेश आने की है जरूरत: कैप्टन

पर्यावरण रक्षा के लिए कड़ा रुख अपनाते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने हर नागरिक को सांझे तौर पर प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने प्रदूषण की रोकथाम के लिए पर्यावरण के मापदण्डों के पालन के लिए उद्योग के साथ सख्ती से पेश आने की जरूरत पर भी जोर दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार नीतियां बनाकर उनको लागू कर सकती है, लेकिन उसे वास्तविक रूप देने के लिए हर नागरिक द्वारा निजी यत्न किए जाने की जरूरत है। उद्योगों द्वारा पर्यावरण नियमों का सख्ती से पालन करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री ने लोगों को भूजल की संभाल के लिए जिम्मेदारी निभाने का न्योता दिया। अगले 20 साल में पंजाब के मरूस्थल बन जाने की रिपोर्टों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मुफ्त बिजली और पानी के साथ इसकी बर्बादी हुई है, जिस कारण इस सम्बन्ध में किसानों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास करने की जरूरत है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर का सन्देश

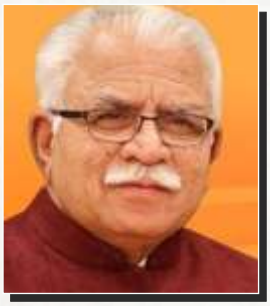

हरियाणा की सभी पालिकाओं में होगा सेप्टिक प्रबंधन: खट्टर

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर ने प्रदेश के सभी शहरी क्षेत्रों में सेप्टिक प्रबंधन के लिएआवश्यक दिशा-निर्देशों को मंजूरी प्रदान की है। राज्य की सभी नगर पालिकाओं को निर्देश दिए गए हैं कि वे निकाय क्षेत्र के दायरे में उन तमाम टैंकरों का पंजीकरण करें, जो क्षेत्र में घर और अन्य स्थानों से सेप्टिक वेस्ट निकालने का काम करना चाहते हैं। बिना पंजीकरण के चलने वाले सेप्टिक टैंकरों को भारी जुर्माने का सामना करना होगा। गुरूग्राम की तर्ज पर प्रारंभ होने वाले सेप्टिक प्रबंधन में पालिका स्तर पर स्थानीय अनुकूलता के मुताबिक व्यवस्था बनाई जाएगी। यह सुनिश्चित किया जाएगा कि किसी भी घर या संस्थान से निकला सेप्टिक वेस्ट खुले में न डलने पाए जिससे बीमारी को दावत मिले। प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में सेप्टिक प्रबंधन को लेकर अब तक कोई नीति नहीं होने के कारण निजी सेप्टिक टैंकर घर अथवा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से निकाला गया सेप्टिक वेस्ट मौका देखकर कहीं भी खुले स्थान पर अथवा बरसाती पानी नाले में डालकर न केवल महामारी फैलने की संभावना को बढ़ावा दे रहे थे, बल्कि वे पर्यावरण को भी क्षति पहुंचा रहे थे।

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर का सन्देश

हिमाचल प्रदेश सरकार पर्यावरण अनुकूल पर्यावरणीय प्रथाओं के माध्यम से प्रदेश को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। पर्यावरणीय हस्तक्षेप के माध्यम से राज्य के लोगों के हित एवं उनकी भलाई के लिए सुधार करना ही उनका उद्देश्य है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया है कि आओ, हम सब अपने राज्य और देश के पर्यावरण की रक्षा करें।

Haryana Organics

(A Division of Globus Spirits Limited - formerly Globus Agronics Limited)
4 KM., Chulkana Road, Samalkha - 132 101, Distt. : Panipat (Haryana)

We Care for the environment

"We have developed innovative ways to preserve the environment. All the by-products generated in the plants are re-used, recycled and sold to minimize cost and maximize efficiency at every stage."

- Dried grain husk used for Power Generation.
- The ash used as a construction material.
- The residual grain i.e. dry wash sold as Cattle Feed.
- The water is purified & recycled .
- Husk fumes & fly ash managed properly.
- The Carbon dioxide is purified, bottled and sold to the carbonated drinks manufacturers.

Haryana Organics

(A Division of Globus Spirits Limited - formerly Globus Agronics Limited)

4 KM., Chulkana Road, Samalkha - 132 101, Distt. : Panipat (Haryana)
Telefax : (+91 180) 2570122 E-mail : hosamalkha@globusgroup.in

Corporate / Registered Office : Globus Spirits Limited
F-0, Ground Floor,The Mira Corporate Suites, Plot No. 1 & 2,
Ishwar Nagar, Mathura Road, New Delhi 110065
Tel.: +91-11-66424600, Fax: +91-11-66424629,
E:corpoffice@globusgroup.in

शालू शर्मा

हाथ नहीं धोए हैं क्या?

सावधान, कोरोनावायरस के रोगाणु भी जा सकते हैं आप के शरीर में!

हमारे चारों ओर अनगिणत किस्म के घातक, हानिकारक एवं नुकसान पहुंचाने वाले जीवाणु, वायरस और रोगाणु मौजूद हैं। ये रोगाणु व्यक्ति के शरीर में पहुँच कर अनेक तरह की संक्रामक बीमारियां फैला सकते हैं। हमें स्वयं को बीमार होने से बचाने और दूसरे लोगों में रोगाणु फैलने से रोकने के लिए शरीर में इनका प्रवेश रोकना होगा। इसके लिए हमें अपने हाथ साफ रखने होंगे क्योंकि बीमारियों से बचने के लिए हाथों को साफ़ रखना सबसे महत्वपूर्ण कदमों में से एक है। 'सेन्टर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन' के अनुसार कई बीमारियां और बीमार होने जैसी अवस्थाएं केवल साबुन एवं स्वच्छ प्रवाही जल के साथ हाथ नहीं धोने से ही उत्पन्न होती हैं। इस संस्थान के अनुसार बीमार होने तथा दूसरों को रोगाणुओं से बचाने के लिए हमें अच्छे तरीके से हाथों की सफाई करनी चाहिए। हाथ धोने की औपचारिकता मात्र करने और हाथ धोने की उचित तकनीक के अभाव में ही लोगों में वायुजनित रोग फैलते हैं।

हैंडवाशिंग से तो कोविड-१९ जैसी महामारी को रोकने में भी मदद मिलती है। भारत के जल शक्ति मंत्रालय ने बीते 31 मार्च को सभी राज्य सरकारों को दुनिया भर के विशेषज्ञों द्वारा हाथ धोने सम्बंधित संदेश को फैलाने का आग्रह किया था कि सभी नागरिकों के लिए साबुन और पानी के साथ दिन भर में 20 सेकंड तक बार-बार हाथ धोना महत्वपूर्ण है। परन्तु, यदि आपके पास पर्याप्त स्वच्छ पानी ही नहीं है तो तब क्या होगा? चूंकि अपने देश में स्वच्छ पानी दुर्लभ है, इसीलिए ग्रामीण भारतीयों का हैंडवाशिंग के प्रति रवैया भी ढुलमुल ही है।

'यूनिसेफ' जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था ने भी कोविड-19 की महामारी के दौरान बार-बार हाथ धोने की सलाह दी है। यूनिसेफ का कहना है कि सार्वजनिक स्थानों पर जाने के बाद या घर के बाहर की किसी भी सतह को छूने के बाद, खांसने, छींकने, या अपनी बहती नाक साफ़ करने के बाद,

और टॉयलेट का प्रयोग करने या खाना खाने से पहले और खाने के बाद निश्चित रूप से अच्छी तरह से हाथ धोने की सलाह दी है। ज्ञात हो, भारत मे शिशु और बाल मृत्यु दर का सबसे बड़ा एकमात्र कारण अच्छे से हैण्डवाशिंग नहीं करना ही है। अध्ययनों से पता चला है कि हैंडवॉशिंग दस्त के जोखिम को 43 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

अपने हाथों को ठीक से धोने के लिए सबसे पहले प्रवाही जल में अपने हाथों को गीला करें, उसके बाद नल को बंद करके हाथों पर अच्छी तरह से 20 सेकंड तक साबुन लगाएं और हाथों को मलें। यदि हाथों पर ज्यादा गंदगी जमी हुई है, तो साबुन को लगाकर कुछ ज्यादा समय तक हाथों को मलें एवं एक साथ तेजी से अपने हाथों व कलाई की सभी सतहों को रगड़ें। अपने हाथों की हथेलियों, कलाई, उंगलियों के बीच वाले हिस्सों और अपने नाखूनों को ठीक से धोना मत भूलें। अगर संभव हो तो, अपने हाथ धोने से पहले, अपनी अंगूठियां और घड़ियों को निकाल दें या सुनिश्चित करें कि अंगुठियां को भी पानी के नीचे अच्छे से धोना चाहिए, क्योंकि सूक्ष्मजीव उनके भीतर भी मौजूद रह सकते हैं।

चलते हुए अथवा प्रवाही पानी में हाथों को अच्छी तरह से खंगालने के पश्चात् यह सुनिश्चित करें कि साबुन ने सारी गंदगी हटा दी हैं। उसके पश्चात एक साफ तौलिये से अपने हाथों को सूखाएं। हाथ सूखाने के लिए पेपर तौलिए का उपयोग करना सबसे अच्छा है। किसी भी अंगूठी अथवा छल्ले को भी नीचे से सूखाना जरूरी है, क्योंकि यदि वे नम रहते हैं तो वे भविष्य में प्रदूषण का स्रोत हो सकते हैं। अत: हमें बीमार होने से बचने और दूसरों को संक्रमित करने से बचाने के लिए हाथ साफ रखना सबसे महत्वपूर्ण कदमों में से एक है।

हमें बचपन से ही शौचालय का प्रयोग करने के बाद और भोजन करने से पहले अच्छी तरह से अपने हाथ धोने के लिए बताया गया है। हम यह

अपने हाथों की हथेलियों, कलाई, उंगलियों के बीच वाले हिस्सों और अपने नाखूनों को ठीक से धोना मत भूलें। अगर संभव हो तो, अपने हाथ धोने से पहले, अपनी अंगूठियां और घड़ियों को निकाल दें या सुनिश्चित करें कि अंगुठियां को भी पानी के नीचे अच्छे से धोना चाहिए, क्योंकि सूक्ष्मजीव उनके भीतर भी मौजूद रह सकते हैं।

Courtesy:

BALAJI LOOMTEX PVT. LTD.

Manufacturer, Exporters & Importer of
All Types of Textile Goods

Nimbri Bapoli Road, Opp. Govt. Girls College,
Behrampur, Panipat (India)
Ph.: 82956-00542, 9999918323, 91-180-2586100, 2587100
Email: balajiloomex1976@gmail.com

भी जानते हैं कि व्यक्तिगत स्वच्छता के लिए हाथों को अच्छी तरह से धोने के लिए उचित तकनीक का अभ्यास करना कितना महत्वपूर्ण है। परन्तु, शौचालय एवं वॉशरूम का उपयोग करने के बाद बहुत से लोग अपने हाथ नही धोते हैं जिससे लोगों में कई तरह के संक्रमण पनप रहे हैं। हम दिनभर में ऐसी बहुत सी चीजों को छूते हैं जिन्हें अन्य लोगों ने भी छुआ होता है। मुमकिन है कि उन स्थानों और वस्तुओं पर कोरोनावाइरस से लेकर अन्य रोगजनक बैक्टीरिया विद्यमान हों जिनसे या तो हमें अथवा उन लोगों को संक्रमण हो सकता है जिन्होंने वहां पर हाथ लगाए हों। इसी तरह, यदि आप गंदे हाथों से भोजन तथा खाद्य पदार्थ तैयार करते हैं तो यह संभव है कि उस भोजन में भी रोगजनक बैक्टीरिया घुस जाएं और जो भी आपने बनाया है, उसे खाकर आप या अन्य लोग संक्रमण पकड़ लें। यदि आप गंदे हाथों से भोजन करते हैं, तो किसी न किसी का बीमार पड़ना तय है।

जानकारों का कहना है कि अच्छी तरह से हाथ नहीं धोने से लोगों में कोविड-१९ सहित अनेक तरह की संक्रामक बीमारियां आने का खतरा रहता है जिनमें से कई तो कोविड-१९ की तरह जानलेवा होती हैं। उदाहरण के लिए कोरोनावाइरस के रोगाणु ने आज पूरी दुनिया में कहर मचा रखा है। कोरोनावाइरस से फैली कोविड-१९ नामक महामारी की वजह से विश्व भर में अब तक 5 लाख से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं और 1 करोड़ से ज्यादा इस वायरस से प्रभावित हैं। कोरोना वायरस की वजह से दुनियाभर में हुई मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। लाखों की संख्या में मरीज इस वायरस की वजह से संक्रमित हैं। दुनियाभर में इस बीमारी को लेकर अलर्ट जारी किए जा रहे हैं। कोरोना वायरस विषाणुओं का एक बड़ा समूह है, जो इंसानों में सामान्य जुकाम से लेकर श्वसन तंत्र की गंभीर समस्या तक पैदा

कर सकता है। कोरोना वायरस की वजह से श्वसन तंत्र में हल्का इंफेक्शन हो जाता है और इस संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक कोरोना वायरस से संक्रमित होने पर 88 फीसदी को बुखार, 68 फीसदी को खांसी और कफ, 38 फीसदी को थकान, 18 फीसदी को सांस लेने में तकलीफ, 14 फीसदी को शरीर और सिर में दर्द, 11 फीसदी को ठंड लगना और 4 फीसदी में डायरिया के लक्षण दिखते हैं।

केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए भी दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक, हाथों को 20 सेकंड तक साबुन से अच्छी तरह से धोना चाहिए। अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छीकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिश्यू पेपर से ढककर रखें। जिन व्यक्तियों में ठंड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें । इसी तरह नोरोवायरस रोगाणु भी वायरल गैस्ट्रोएंटेरिटिस का सबसे आम कारण है। यह वायरस भी कोरोना वायरस की तरह सभी उम्र के लोगों को प्रभावित कर सकता है। जब लोग अपने हाथ नहीं धोते हैं, तो कोरोनावाइरस और नोरोवायरस जैसे रोगजनक बैक्टीरिया संचरित हो जाते हैं और चिंता की बात यह है कि इनका संक्रमण लोगों के बड़े समूहों के भीतर बहुत तेजी से फैल जाता है। जब किसी परिवार में कोई एक व्यक्ति भी इन वायरस से की वजह से बीमार पड़ जाता है, इनके संक्रमण की चपेट में उस घर के सभी लोग आ जाते हैं। इस रोगजनक बैक्टीरिया के सक्रमण से पीड़ित व्यक्ति यदि किसी कार्यालय में काम करता है और बीमारी के समय में वह दफ्तर आता है तो उस

कार्यालय के सभी लोग उस संक्रमण को पकड़ लेते हैं। कोरोनावाइरस और नोरोवायरस को पहली जगह में फैलने या होने से रोकने के लिए सबसे अच्छा तरीका यही है कि शौचालय एवं वाशरूम का उपयोग करने के बाद अपने हाथों को अच्छी तरह से धोएं और यदि आप पर भोजन को तैयार करने की जिम्मेदारी है, तो भोजन तैयार करने से पहले हाथों से अपनी नाक और मुंह को छूने से बचें। कोविड-१९ जैसा श्वसन रोग आमतौर पर किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा फैलता है जिसको पहले से ही यह बीमारी लगी हुई है। उस व्यक्ति के नाक से निकल रही निस्त्राव की बूंदों के हवा में मिलने या उसकी छींक के माध्यम से वायुजनित रोग फैलते हैं। छींक और खांसी तो लोगों में ऐसी बीमारियां फैलाने में मदद करती ही हैं, खराब हाथ धोने की तकनीक भी इस रोग की एक बडी अपराधी है। हाथों की खराब स्वच्छता के कारण सामान्य श्वसन सम्बंधित बीमारियां, सामान्य सर्दी, इन्फ्लूएंजा, चिकन पॉक्स और मेनिनजाइटिस जैसी बीमारियां तेजी से फ़ैलती हैं। हवा में संक्रमित बूंदें जब आस-पास की वस्तुओं पर गिरती हैं तो उन्हीं से वायुजनित बीमारियां फैल जाती हैं। कोई व्यक्ति जब किसी एक संक्रमित वस्तु को छूता है तो उस वस्तु पर मौजूद जीवाणु उस व्यक्ति के हाथों से उसके नाक या मुंह के माध्यम से उसके शरीर में घुस जाते हैं और उसको संक्रमित करके बीमार कर देते हैं, उसके बाद वह व्यक्ति कोरोना वाइरस और नोरोवायरस या बैक्टीरिया का संवाहक बनकर इसको अन्य लोगों में हस्तांतरण करके बीमारी को उनमें भी फैला देता है।

छींकने के बाद और त्वरित मूत्र विसर्जन के बाद आप वास्तव में कितनी बार अपने हाथ धोते हैं ? आप दिनभर में न जाने कितने विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलकर उनसे हाथ मिलाते हैं, विभिन्न स्थानों पर जाते हैं, तथा विभिन्न वस्तुओं को छूते

भी रहते हैं और दिन भर अपने हाथों पर तरह-तरह के रोगाणु जमा करते रहते हैं। इस के बदले में, आप स्वयं अपने हाथों को धोये बिना ही अपनी आंखों, नाक या मुंह को छूकर कोविड-१९ सहित दूसरे रोगाणुओं से खुद को ही संक्रमित कर लेते हैं। हालांकि, यह सही है कि अपने हाथों को सदैव रोगाणु मुक्त रखना असंभव है, फिर भी शौचालय का प्रयोग करने के बाद अपने हाथों को धोते रहने से बैक्टीरिया, वायरस और अन्य सूक्ष्मजीवों के हस्तांतरण को हम सीमित करने में मदद कर सकते हैं। बीमारियों को दूर रखना चाहते हैं तो सबसे पहली शर्त अपने हाथों को ठीक से धोने की है।

हम प्राय: अस्पतालों में अस्पतालों से अर्जित संक्रमणों के बारे में सुनते रहते हैं, जिनको मुख्यत: अस्पताल के कर्मचारी और मरीजों के द्वारा फैलाया जाता है। अस्पतालीय संक्रमण मरीजों की देखभाल में लगे पैरामेडिकल स्टाफ और संक्रमित व्यक्तियों के हाथ नहीं धोने के परिणामस्वरुप ही होता है। वैसे तो अस्पतालों से अर्जित संक्रमण की समस्या दुनिया भर के अस्पतालों में विद्यमान है, परन्तु भारत के अस्पतालों में स्वाभाविक रूप से इस संक्रमण की एक बहुत बड़ी मात्रा मौजूद है। हमारे देश में सामान्यत: अस्पतालों के कर्मचारी रोगियों को देखने आने से पहले और बाद में अपने हाथ नहीं धोते हैं और संक्रमित लोग भी अपने हाथों की स्वच्छता का ध्यान नहीं रखते हैं, लिहाज़ा अस्पतालों में भर्ती मरीज़ आसानी से अपनी बीमारी के अतिरिक्त उन संक्रमणों की भी चपेट में आ जाते हैं जो उनमें पहले थे ही नहीं। इसी तरह अस्पतालों में अपने मरीजों को देखने आने वाले लोगों को भी अस्पतालीय संक्रमण हो सकता है। सबसे साधारण अस्पतालीय संक्रमण (नोसोकोमियल) जो हमारे हाथों के रोगाणुओं और बैक्टीरिया से फैल सकते हैं, में 'मेथिसिलिन- प्रतिरोधी स्टाफिलोकोकस ऑरियस' और ई० कोली के संक्रमण शामिल हैं। हेपेटाइटिस 'ए' एक ऐसा वायरल संक्रमण है जो

यकृत, पीलिया, पेट दर्द, बुखार और थकान जैसी समस्याओं सहित व्यक्ति में गंभीर लक्षण पैदा कर सकता है। यह अक्सर भोजन के माध्यम से फैलता है, जो विशेषकर भोजन तैयार करने वाले उन लोगों के द्वारा फैलता है जिन्होंने शौचालय या वॉशरूम का उपयोग करने के बाद ठीक से अपने हाथ नहीं धोये हों। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एलर्जी एंड इन्फेक्शस डिज़ीज़ के अनुसार मानव के दूषित मलीय पदार्थ के माइक्रोस्कोपिक निशान भी रोग के संचरण का कारण बन सकता है। इसी लिए हाथ धोने की अच्छी तकनीक का अभ्यास बीमारियों को फैलने से रोकने के सबसे आसान और सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। हाथ धोने की अच्छी तकनीक का अभ्यास उन लोगों जो किसी कार्यस्थल पर एक साथ ही काम करते हैं या किसी एक बड़े परिवार, जहां लोगों के एक बड़े समूह द्वारा एक ही संक्रमण पकड़ने की संभावना हो, के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

कोरोनावाइरस और अन्य कई वायरस तो केवल लोगों के नाक या मुंह के द्वारा उनके शरीर में प्रवेश करके अपनी चपेट में लेते हैं। बीमारियों से ग्रस्त लोग यदि शौचालय का उपयोग करने के बाद अपने हाथों को अच्छी तरह से नहीं धोते हैं, तो वे अपने आस-पास की वस्तुओं या भोजन को छूकर मलीय- मौखिक मार्ग से प्रसारित होने वाली संक्रमण वाली बीमारी फैला सकते हैं। मलीय- मौखिक मार्ग बीमारी के संचरण के एक विशेष मार्ग को कहा जाता है। मूलत: मानव मल के कणों में मौजूद रोगजनक जब एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के मुंह के द्वारा उसके शरीर में चले जाते हैं, तो उस मार्ग को ही मलीय- मौखिक मार्ग कहा जाता है। मलीय- मौखिक मार्ग से बीमारी के हस्तांतरण के मुख्य कारण समाज में व्याप्त पर्याप्त स्वच्छता की कमी, खराब स्वच्छता एवं हाइजीन प्रथाएं और लोगों की खुले में शौच करने की प्रवृति शामिल हैं।

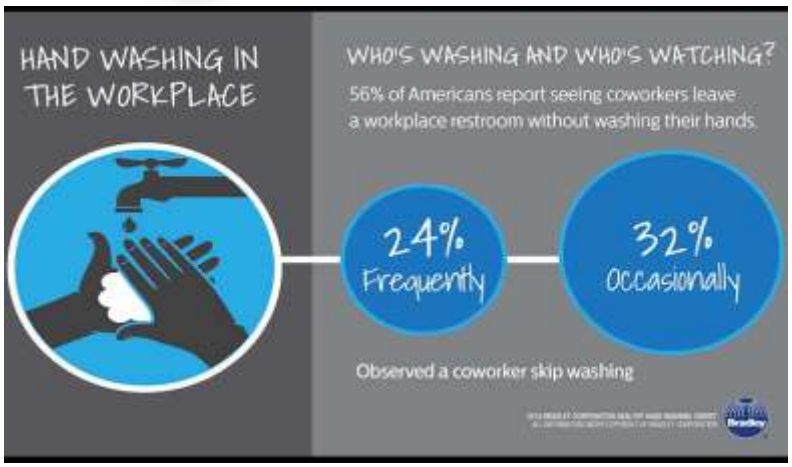

अगर मलीय सामग्री से मिट्टी या जल-निकाय प्रदूषित हो रहे हैं, तो लोगों में जल-जनित बीमारियां या मिट्टी से संक्रमित बीमारियां लग सकती हैं और फिर उनसे दूसरे मनुष्य भी संक्रमित हो सकते हैं। मानव-मल से भोजन की दूषितता भी मलीय- मौखिक मार्ग के द्वारा संचरण का एक और रूप है। एक बच्चे के डायपर को बदलने और शौचालय में जाने के बाद अच्छी तरह से हाथ धोने की आदत से हम बहुत सी बीमारियों को फैलने से रोक सकते हैं। व्यक्तियों की उंगलियों, मक्खियों, उनके कार्यक्षेत्र, द्रव पदार्थ और भोजन आदि सामान्य मलीय-मौखिक मार्ग के संवाहक हैं।

एनलिंगस अर्थात यौन संबंधों में अपने साथी की गुदा में जीभ या उंगली डालना या अन्य प्रकार के एनलिंगस अभ्यास आदि भी एक और मलीय-मौखिक मार्ग है। मलीय- मौखिक मार्ग के संचरण के कारण दस्त, आंत्र ज्वर रोग अर्थात टाइफाइड, हैज़ा, पोलियो और हेपेटाइटिस जैसी बीमारियां शामिल हैं। साल्मोनेला, ई कोलाई ओ 157 की तरह लोगों या जानवरों का मल भी रोगाणुओं का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। एडेनोवायरस और हाथ-पैर-मुंह की बीमारी की तरह, नोरोवायरस दस्त का कारण बनता है तथा इससे सांस लेने का संक्रमण भी फैल सकता है।

लोगों ने शौचालय का उपयोग करने या बच्चे का डायपर बदलने के बाद, यदि अपने हाथों को अच्छी प्रकार से नहीं धोया है, तो ही उनमें इस प्रकार के रोगाणु मिल सकते हैं। इसी तरह जब वैज्ञानिक एवं स्पष्ट तरीकों से कच्चे मांस को संभालने और संचालन का काम नहीं किया जाता है तो, उस मांस में पशुओं के मल की अदृश्य मात्रा रह ही जाती है। जानवरों के मल में भी अनेक रोगाणु पनपते हैं। ज्ञात हो, मानव मल का एक ग्राम जो संभवत: पेपर की एक क्लिप के वजन के बराबर भी न हो, में एक ट्रिलियन रोगाणु हो सकते हैं।

दुनिया भर के 5 साल से कम उम्र के लगभग 18

लाख बच्चे हर साल डायरिया यानि दस्त से बीमारी और निमोनिया से मर जाते हैं। छोटे बच्चों के लिए डायरिया और निमोनिया दो शीर्ष घातक बीमारियां हैं। साबुन के साथ हैंडवाशिंग डायरिया से पीड़ित 3 छोटे बच्चों में से 1 बच्चे की रक्षा कर सकती है और श्वसन संक्रमण के साथ निमोनिया से पीड़ित 5 में से 1 छोटे बच्चे की जान बचा सकती है। हालांकि, दुनिया के लोग पानी के साथ तो अपने हाथ साफ करते हैं, परन्तु यह सच्चाई है कि बहुत ही कम लोग अपने हाथों को धोने के लिए साबुन का उपयोग करते हैं। साबुन के साथ हाथ धोने पर रोगाणु अधिक प्रभावी ढंग से हटाए जा सकते हैं। शिक्षा में हैंडवाशिंग और स्कूलों में साबुन की पहुंच होने से स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति में सुधार कर सकते हैं। आरंभिक जीवन में अच्छे तरीके से हाथ धोने की प्रवृति से कुछ भिन्न प्रकार के पर्यावरणीय वातावरण एवं माहौल में भी बाल विकास में सुधार हो सकता है। हैंडवाशिंग से दस्त से संबंधित लगभग 30 प्रतिशत बीमारियां रोकी जा सकती हैं और लगभग 20 प्रतिशत सर्दी से सम्बंधित श्वसन संक्रमण को रोका जा सकता है। हाथ धोने की प्रवृति से अक्सर इन संक्रमणों की संख्या को बहुत हद तक कम करने में मदद मिलती है। दुनिया अब एंटीबायोटिक प्रतिरोध की ओर अग्रसर है, अत: एंटीबायोटिक्स के अत्यधिक उपयोग को रोकने में हैंडवाशिंग अकेला सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो बहुत कारगर भी है। लोग जिन एंटीबायोटिक दवाओं से प्रतिरोधी जीवाणुओं से बीमार हैं और जिनका इलाज करना भी मुश्किल हो सकता है, उनको हाथ धोने से रोका जा सकता है।

यदि आप वयस्क हैं, तो आप अपने हाथ धोने के महत्व को जानते होंगे। उल्लेखनीय है कि लगभग 80 प्रतिशत संक्रामक बीमारियां स्पर्श के द्वारा ही फैलती हैं। जब आप रोगाणुओं से भरी हुई दरवाजे के किसी सतह, उसके हैन्डल

या उसकी किसी एक मूठ को पकड़ते हैं, तो वहां मौजूद रोगाणु आप के हाथों पर आ जाते हैं और फिर जब आप संक्रमित हाथों से अपनी नाक को छूते हैं तो उन रोगाणुओं से तुरंत संक्रमित हो सकते हैं। यह एक सकल एवं ठोस सत्य है कि मानवीय मल के कण आप के अपने हाथों सहित इतने स्थानों पर छिपे रहते हैं कि आप सोच भी नहीं सकते हैं। इसमें भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मल के रोगाणु आप के भोजन में भी जा सकते हैं और आपको बीमार कर सकते हैं। यह चौंकाने वाला और घिनौना सत्य है, लेकिन यह इस तरह से नहीं होना चाहिए। अत: शौचालय में जाने के बाद, बच्चे का डायपर बदलने के बाद, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने के बाद, भोजन तैयार करने और उसको छूने से पहले हमेशा अच्छी तरह से अपने हाथों को धोएं।

खाद्य विषाक्तता अथवा कम पकाए हुए मांस को खाने से लेकर या जो खाना खराब हो गया है के विषय में निर्णय लेने के तो कई तरीके हैं। परन्तु, गंदे हाथों से भोजन तैयार करके आप भी घिनोनी एवं भयानक संक्रमण वाली बीमारी प्राप्त कर सकते हैं। खाद्यजनित रोगों के प्रकोप का बहुत बड़ा प्रतिशत केवल दूषित हाथों से ही फैलता है। हाथ धोने की उपयुक्त प्रथाओं का पालन करने से हम खाद्यजनित बीमारियों और अन्य संक्रमण के जोखिम को कम कर सकते हैं। अत: भोजन बनाने से पहले अपने हाथों को धोकर अपने आप पर और अन्य सभी पर आप यह अनुग्रह कर सकते हैं।

दुनिया भर की सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्याओं में से लोगों को ज्यादातर खाद्यजनित बीमारियों से ही सबसे अधिक बार आमना-सामना करना पड़ता हैं।

कई खाद्यजनित बीमारियों की उत्पत्ति भोजन तैयार करने से लेकर उसके प्राथमिक उत्पादन से उपभोक्ता तक की खाद्य श्रृंखला के किसी भी चरण में हो सकती है। भोजन की मलिनता का

लोगों की सेहत पर पड़ने वाले असर के अलावा, इसकी तैयारी तथा बिक्री करने वाले प्रतिष्ठानों की आर्थिक स्थिति पर भी भारी दुष्प्रभाव पड़ता है और यदि भोजन के संदूषण से लोगों में किसी बीमारी का प्रकोप हो जाता है, तो ऐसे प्रतिष्ठान ग्राहकों में अपनी विश्वसनीयता खो देते हैं एवं अंतत: बंद ही हो जाते हैं। सौभाग्यवश, भोजन के प्रदूषण से बचने के लिए बहुत ही सरल उपाय सही हैण्डवाशिंग और स्वच्छता है जिन्हें भोजन की तैयारी तथा बिक्री में लगा कोई भी व्यक्ति अपना सकता है।

परन्तु, भारत में स्वच्छ पानी की भारी कमी है। 135 करोड़ लोगों के इस देश के सभी घरों में स्वच्छ पेयजल नहीं पहुँचता है। देश में केवल जनसंख्या के पांचवे हिस्से में ही पाइप से पानी पहुँचता है जो हैंडवाशिंग के लिए लगातार चुनौती है। नीति आयोग ने पाया है कि 82 प्रतिशत ग्रामीण घरों अर्थात सभी 14 करोड़ 6 लाख घरों में पाइप के द्वारा पानी नहीं आता है, जबकि लगभग 60 प्रतिशत शहरी घरों में भी पाइप से पानी नहीं आता है। उदाहरण के लिए उत्तर मध्य भारत में बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रत्येक पाँच घरों के लिए एक ही साझा नल है। पिछले दो दशकों में बुंदेलखंड में 13 लंबे सूखे पड़े हैं। पानी की कमी वहां जीवन का एक तरीका बन चुका है। ऐसी स्थिति महाराष्ट्र सहित कई राज्यों की है जहां पानी की भारी कमी है।

कोविड-19 की महामारी अब बुंदेलखंड में भी तेजी से फैल रही है, जबकि महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु और दिल्ली में इस महामारी नें अपना कहर बरपाया हुआ है। बुंदेलखंड, ओड़िसा और मराठवाडा जैसे क्षेत्रों के ग्रामीण लोगों को पानी के अभाव में एक चिंताजनक विकल्प का सामना करना पड़ रहा है कि वे अपने हाथ धोएं या अपनी सामाजिक दूरी बना कर रखें। हालांकि, एक ही समय में बीमारी को दूर रखने के दोनों तरीकों का अभ्यास कठिन है।

सरकारी सर्वेक्षणों के अनुसार, ज्यादातर

भारतीयों में से कुछ 70 प्रतिशत लोग भोजन से पहले साबुन के बिना ही हाथ धोते हैं, जबकि 30 प्रतिशत से अधिक शौच के बाद ऐसा करते हैं। वे कभी-कभी साबुन से, कभी रेत, राख या कीचड़ से हाथ धोते हैं। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में भूजल की कमी या जल-प्रदूषण से भी स्वच्छ जल को खतरा है। जाहिर, भारत में दिन भर हाथ धोने के लिए पर्याप्त पानी नहीं है। हाथों की स्वच्छता की यही कमी यहां ग्रामीण समुदायों को विभिन्न संचारी रोगों के प्रति संवेदनशील बनाती है। हैजा, पेचिश, हेपेटाइटिस ए, और टाइफाइड जैसे लगभग 21 प्रतिशत संचारी रोग, जल-जनित हैं, जिन्हें बेहतर हैंडवाशिंग के साथ रोका जा सकता है, इनमें फ्लू और कोविड-19 जैसे श्वसन संबंधी रोग भी शामिल हैं।

हैण्ड वाशिंग में 20 सेकंड तक हाथों को गीला करके हाथों को धोकर साफ़ करने में कम से कम दो लीटर से अधिक पानी का उपयोग हो जाता है। चार व्यक्तियों वाले परिवार के लिए प्रत्येक दिन 10 बार हाथ धोने में कम से कम 80 लीटर पानी तो सिर्फ हैंडवाशिंग के लिए खर्च होना तय है जो कि ग्रामीण भारत के अधिकांश हिस्सों में एक अकल्पनीय लक्जरी के सामान है। हैण्डवाशिंग की यह प्रक्रिया आसानी से दिन में कम से कम 10 बार हो जाती है जो अपने देश के लिए बहुत अधिक हैंडवाशिंग है। हालांकि, एक अमेरिकी नागरिक प्रतिदिन औसत 100 गैलन - लगभग 379 लीटर पानी का उपयोग करता है।

इस साल, गर्मी से पहले ही, भारत का लगभग 33 प्रतिशत भू-भाग पहले से ही सूखे या सूखे जैसी स्थितियों का सामना कर रहा है। प्रभावित क्षेत्र ज्यादातर ग्रामीण भारत है जहां लोग प्रतिदिन प्रति व्यक्ति अधिकतम 20 से 25 लीटर पानी देने के

लिए सरकारी पानी की टंकी के ट्रकों पर निर्भर हैं। यह पानी कोविड-19 की रोकथाम के लिए हैंडवाशिंग के लिए तो पर्याप्त है, लेकिन अगर ग्रामीण अपनी कुछ अन्य जरूरतों के लिए पानी का उपयोग करना चाहें तो ग्रामीण भारत में दिन भर हाथ धोने के लिए यह पानी पर्याप्त नहीं है। एक रिपोर्ट में पाया गया है कि दुनिया भर में 3 बिलियन या वैश्विक आबादी के 40 प्रतिशत लोगों को साबुन और पानी से हाथ धोने के लिए घर पर बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। हालांकि, प्रधान मंत्री श्री मोदी ने सन 2024 ई० तक, प्रति ग्रामीण 55 लीटर पानी की दर से प्रत्येक ग्रामीण परिवार को पाइप के द्वारा पानी उपलब्ध कराने का वादा किया है।

---

* लेखिका हरियाणा शिक्षा विभाग में एक अध्यापिका हैं।

VARDHMAN CREATIONS PVT. LTD.

Vardhman Creations

Redefining Luxury

Manufacturer of : Bathmat, Rugs, Kitchen Items, Bed Linen, Curtains, Shower Cuirtains, Quilts, And Madeups etc.

(A Government Recognised Star Export House)

AN ISO 9001 : 2015, ISO 14001 : 2015, OHSAS 18001 : 2007, BSCI Certified Company

---

INTEGRATED MANAGEMENT SYSTEM | OEKO-TEX | GOTS | SA 8000 | amfori BSCI Trade with purpose

---

Corporate Office

Plot No. 487-488 H. S. I. I. D. C.
Barhi Industrial Area PH – II
District : Sonepat
Haryana-131101
Contact:9896000581

Works

Village Sewah Behind
Petrol Pump
District : Panipat
Haryana-132103
Contact:9812089581

कबाड़ी बच्चे

डॉ. कमल के. 'प्यासा'

काले कलूटे
फटे हाल
लिए मैले-मैले
नन्हें हाथ —!
हाथों में थामें
रोजी-रोटी का जुगाड़
एक अदद बोरी और
मुड़ी लोहे की तार —!
पौ फटते ही
गली हाट बाजार
कहीं बस्ती से बाहर
नदी-नाले के आर-पार
ढूंढते, तलाशते —
बीनते ढेर —
नन्हें-नन्हें मैले हाथ!
खोजी-पैनी नज़रें
जहां पड़ती
पा लेती उपचार
हो जाती फिर खुद ही
शान्त —,
लगी पेट की आग—!
आंखें मूंदे,
सभी देखते —
भूखे-नंगे भिखारी समझते
कि भटकते रहते हैं
कबाड़ से खेलते
अक्सर कबाड़ी बच्चे!
कूड़े में हाथ डालते
कचरे से कबाड़ खोजते
गन्दे लगते हैं —
नाक सिकुड़ जाते हैं —
मुंह फिर जाते हैं —,
पर्यावरण प्रेमियों और
प्रदूषण विरोधियों के
तो कहीं पढ़े-लिखे
सफेद-पोश समाज के
ठेकेदारों के —!—!
कौन जानता है —
इन्हें —?—
इन नन्हें-नन्हें
मैले हाथों को —!
क्या ये व्यर्थ परजीवी
पर्यावरण रक्षक —
प्रदूषण रोधी नहीं —?
जैविक-अजैविक प्रदूषकों से
खोजते-तलाशते
छिपी नष्ट होती निधि
पालीथीन, टिन कनस्तर
लोहा-मेटल प्लास्टिक
यहां-वहां बिखरे
अमूल्य कण-कण को!
जिनके निरूपण एवं
पुनर्चक्रण में भी
अग्रगामी रहते
यही नन्हें-नन्हें मैले हाथ
हाथों में थमी तार—
तार से छांटते - निकालते
बोरी में भरते —
देश की आर्थिक स्थिति
मजबूत करते
रोजगार, रोजी-रोटी
उद्योग-धन्धे चलाते
संपत्ति बचाते
बदहाली मिटाते
उर्वरता लाते
मिट्टी, जंगल, पानी, वर्षा
सभी पर नियन्त्रण बनाते
फटे हाल
मैले-मैले
काले-कलूटे
नन्हें-नन्हें हाथों वाले
भूखे-नंगे,
दर-दर भटकते
आपके जाने पहचाने
कबाड़ से खेलते कबाड़ी बच्चे!

Courtesy:

Fashion Group International

Manufacturer & Exporter: Textile Home Furnishing

Unit 1
3rd Milestone, Sanoli Road, Panipat - 132 103 (India)
Unit 2
82nd Milestone, G.T. Road, Siwah, Panipat - 132 103 (India)
Ph.: 0180-253506 | Fax : 91-180-2668006
Email ID: vipinsardana@yahoo.com, fashionpnp@yahoo.com

सतिंदर पाल सिंह बांगड़

अस्पतालों के बिस्तरों से भी फ़ैल सकता है कोविड-19 वायरस का संक्रमण

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में लिया हुआ है। इससे संक्रमित लोगों की संख्या दुनिया भर में बढ़कर एक करोड़ से ज्यादा हो गई है और इस वायरस से दुनियाभर में अब तक 6 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। कोविड-19 से अमेरिका में सबसे अधिक लोग प्रभावित है। अमेरिका में इसके मरीजों की संख्या 28.5 लाख के पार पहुंच चुकी है, जबकि यहां 1.60 लाख से अधिक लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। ब्राजील, भारत, रूस और पेरू जैसे देशों में भी मरने वाले लोगों की संख्या लगातार लगातार बढ़ रही है। ब्राजील और भारत में कोरोना का संक्रमण अब ज्यादा तेजी से बढ़ रहा है। कुल मौतों के मामले में ब्राजील दूसरे नंबर पर पहुंच गया है, जबकि भारत भी कुल संक्रमित माम्मलों में चौथे क्रम पर आ चुका है।

कोरोना संक्रमित मरीजों के मामले में भारत से ऊपर सिर्फ रूस, ब्राजील और अमेरिका हैं। वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुके कोविड-19 (कोरोना वायरस) के कारण अब विश्वभर में जनजीवन अस्त- व्यस्त हो गया है। अस्पतालों में मरीजों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, स्टेडियम बंद हैं। भारत में कोरोना वायरस महामारी से मरने वालों की संख्या 20 हज़ार से अधिक हो चुकी है और संक्रमण के कुल मामलों की संख्या 6.५ लाख हो गई है। कोरोना से बिगड़ती स्थितियों को संभालने में केंद्र सरकार की सारी नीतियां फेल हो चुकी हैं। सरकार की इस विफलता का ख़ामियाज़ा कई पीढ़ियों को भुगतना पड़ेगा। लॉकडाउन के दौरान सरकार ने

चिकित्सा व्यवस्था में सुधार के कोई प्रयास नहीं किए। राजधानी दिल्ली के अस्पतालों में भी लोग आधारभूत सुविधाओं के अभाव में मर रहे हैं। दिल्ली के प्राइवेट अस्पतालों में कोरोना के इलाज में लाखों का ख़र्च हो रहा है, जबकि सरकारी अस्पतालों में भी डरावनी सूरत है। इस के अलावा, लोग कोरोना वायरस के संक्रमण से डर कर अब अस्पतालों नें जाने से भी डरते हैं।

अस्पतालों के बिस्तरों पर छूटा हुआ कोविड-19 अर्थात कोरोना वायरस 10 घंटे में पूरे अस्पताल को संक्रमित कर सकता है। इतना ही नहीं, यह वायरस किसी सतह पर पांच दिनों तक जिंदा रह सकता है और महज कुछ घंटों में एक बड़े क्षेत्र में संक्रमण फैला सकता है। यह खुलासा लंदन कॉलेज यूनिवर्सिटी के अध्ययन में हुआ है। अस्पताल के बिस्तर को डिसइंफेक्ट करने के दौरान कोरोना का डीएनए बिस्तर में लगे धातुओं के हत्थों पर छूट सकता है जो अस्पताल की सतह को संक्रमित करने का अहम कारण बनता है। अस्पताल में संक्रमण फैलने में यहां स्पर्श की जाने वाली सभी सतहों की अहम भूमिका होती है, इसलिए जरूरी है कि स्वास्थ्यकर्मी और अन्य तीमारदारों को स्वच्छता के उच्च मानकों का पालन करना चाहिए। शोधकर्ताओं ने पाया है कि दस घंटे बाद भी वायरस से सरोगेट जेनेटिक मटीरियल आइसोलेशन वार्ड के बाहर अलग-अलग सतहों पर पहुंच गया।

शोधकर्ताओं ने जिन 44 जगहों के नमूने लिए थे, उनमें 41 प्रतिशत नमूनों में यह संक्रमण मिला। ये नमूने डोर हैंडिल, वेटिंग रूप में हाथ रखने वाली रेलिंग से लेकर बच्चों के लिए बनाए गए प्ले एरिया के खिलौनों में तक पाया गया। तीन दिन के बाद यह वायरस 59 प्रतिशत स्थानों तक फैल गया और पांचवें दिन वायरस की मौजूदगी घटकर 41 प्रतिशत स्थानों पर ही रह गई। शोध की अग्रणी लेखिका डॉ० लीना सिरिक ने कहा है कि उनकी पड़ताल दिखाती है कि कैसे कोई सतह वायरस के प्रसार में कितनी तेजी से काम करती है और साफ-सफाई में लापरवाही किस कदर भारी पड़ती है। यह दिखाता है कि अस्पताल में खांसना, छींकना या श्वास ही खतरा नहीं है, यहां की सतह पर पड़ी एक बूंद में मौजूद वायरस भी आंख, नाक और मुंह को छूने से बड़ा खतरा बन सकता है।

इस के अलावा, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित 'इन्फेक्शन कंट्रोल एंड हॉस्पिटल एपिडेमियोलॉजी' नामक एक वैज्ञानिक पत्रिका द्वारा किए गए एक अध्ययन के मुताबिक अस्पतालों में मरीजों के संक्रामक दस्त से अस्पतालों के बिस्तर और लॉन्डरिंग में गई लिनन संक्रमण से ग्रस्त हो कर संक्रमण के ही स्रोत बन सकते हैं। अस्पतालों के दूषित बिस्तरों में मौजूद क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल अर्थात संक्रामक डायरिया के स्पोरस नामक बीजाणु (जो जीवाणु बढ़कर नये प्राणी हो जाते हैं) को किसी तरह की धुलाई से भी हटाना बहुत मुश्किल है। अध्ययन के अनुसार अस्पताल के इन बिस्तरों और लिनन को भले ही औद्योगिक डिटर्जेंट के साथ किसी भी वाणिज्यिक वाशिंग मशीन में उच्च तापमान में धोया जाए पर उन्हें विसंक्रमित करना मुश्किल होता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के इस शोध में बताया गया है कि क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल संक्रमण (सीडीआई या सी-डिफ) एक सिम्प्टामैटिक अर्थात लक्षणात्मक संक्रमण है जो बीजाणु बनाने वाले एक मलीय जीव क्लोस्ट्रीडियम डिफिसिल के कारण अस्पतालों में भर्ती वृद्ध मरीजों के दस्त संबधित अधिकांश मामलों में संक्रामक दस्त का कारण बनता है। इसके लक्षणों में पानी के दस्त, बुखार, मतली, और पेट दर्द शामिल हैं। यह एंटीबायोटिक-संबंधित दस्त के लगभग 20 प्रतिशत मामलों का कारण बनता है। जहां तक इस की जटिलताओं का संबंध है, उन में स्यूडोमेब्रब्रोनस कोलाइटिस, विषाक्त मेगाकोलन, कोलन का छिद्रण और सेप्सिस शामिल हो सकता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक पत्रिका 'इन्फेक्शन कंट्रोल एंड हॉस्पिटल एपिडेमियोलॉजी' ने सुझाव देते हुए बताया है कि लांड्री यानि लिनन में क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल ही संक्रमण का स्रोत हो सकता है। क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल संक्रमण मल के भीतर पाए जाने वाले जीवाणुओं से

Courtesy:

ABBS INTERNATIONAL INC.

(Govt. of India Registered. A star Export House)

Manufacturer & Exporters of Retailers of :
Home, Bath & Floor Textiles)

Plot No. 284, (Structure 30) Sector 29-II, Panipat-132103, INDIA
Plot No. 93, Sector 25 Part 1 Panipat-132103, INDIA
Tel.: 91-180-4004844
Email: suren@abbs.in, info@abbs.in
Web: www.abbs.in, www.abbs.com

फैलता है। इतना ही नहीं, हेल्थ केयर कर्मियों के हाथों से भी स्पोरस के इस संक्रमण का फैलाव हो सकता है। वे जहां-जहां भी अपने हाथ लगाते हैं, वहां की सतह संदूषित हो सकती है जो बीमारियों का कारण बन सकती है।

इस संक्रमण के जोखिम कारकों में एंटीबायोटिक या प्रोटॉन पंप इनहिबिटर का उपयोग करना, अस्पताल में भर्ती होने के पश्चात वहां से क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल के संक्रमण को अर्जित करना और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं जैसे बुढ़ापे के जैसी समस्याओं से ग्रसित होना शामिल हैं। इस संक्रमण के निदान के लिए मल अर्थात स्टूल-कल्चर अर्थात मल का परीक्षण करके पाचन तंत्र के संदिग्ध संक्रमण वाले मरीजों में बैक्टीरिया की पहचान करना या बैक्टीरिया के डीएनए और विषाक्त पदार्थों के परीक्षण के द्वारा संदिग्ध संक्रमण का पता लगाया जाता है। यदि किसी व्यक्ति में पॉजिटिव यानि सकारात्मक परिणाम मिलता है और फिर भी उसमें संदिग्ध संक्रमण का कोई लक्षण नहीं हो तो उस स्थिति को संक्रमण के बजाय क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल जीवाणुओं के वहां आबाद होने के रूप में जाना जा सकता है। क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल संक्रमण की रोकथाम अच्छी तरह से हाथ धोने, अस्पताल में टर्मिनल रूम की सफाई करने और एंटीबायोटिक के उपयोग को सीमित करने से हो सकती है। एंटीबायोटिक दवाओं के रोकने से तीन दिनों के भीतर संक्रमित लोगों में से इस संक्रमण के लगभग 20 प्रतिशत लक्षणों का समाधान हो सकता है। संक्रमित व्यक्ति अपने चिकित्सकों से पूरी तरह से जांच करवाने के पश्चात उनकी अनुशंसा

पर प्राय: मेट्रोनिडाज़ोल, वैंकोमाइसिन या फिडाक्सोमिसिन एंटीबायोटिक्स जैसी दवाइयों से इस संक्रमण का इलाज कर सकतें हैं। इस उपचार के बाद, उन्हें पुन: जांच-परीक्षण करवाना चाहिए और जब तक उनके संक्रमण के लक्षणों का समाधान नहीं हो जाता है, डॉक्टर भी प्राय: उक्त एंटीबायोटिक्स को रोकने की अनुशंसा नहीं करते हैं। इस का कारण प्रभावित व्यक्ति में संक्रमण के जीवाणुओं के आबाद रहने की प्रबल संभावना हो सकती है। अनुमान है कि इस संक्रमण से प्रभावित 25 प्रतिशत लोगों में तो संक्रमण की पुनरावृत्ति एवं दुहराव की संभावना भी रहती है। कुछ तात्कालिक सबूत बताते हैं कि मलीय माइक्रोबायोटा के प्रत्यारोपण और प्रोबायोटिक्स से इस संक्रमण की पुनरावृत्ति के खतरे को कम किया जा सकता है।

क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल संक्रमण अमेरिका और यूरोप में एंटीबायोटिक-संबंधित दस्त का एक आम रोगजनक कारण है परन्तु, भारत में अब तक आंतों का यह एक बहुत ही उपेक्षित रोगजनक ही है। वस्तुत: पिछले दशक के दौरान यह जीवाणु एंटीबायोटिक से जुड़े दस्तों के कारणों एवं अस्पतालों और सामुदायिक आबादी से अर्जित आंतों सम्बंधित संक्रमणों का एक प्रमुख रोगजनक बन गया है। क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल संक्रमण दुनिया के सभी क्षेत्रों में मिलते हैं। सन 2011 ई०

में संयुक्त राज्य अमेरिका में इस संक्रमण के लगभग 4,53,000 मामले सामने आए थे जिसके परिणामस्वरूप, 29, 000 मौतें हुईं थीं। वैश्विक स्तर पर इस बीमारी की दर सन 2001 और सन 2016 ई० के बीच बहुत बढ़ी है। हालांकि, पुरुषों की तुलना में महिलाएं इस संक्रमण से अक्सर ज्यादा प्रभावित होती हैं। ज्ञातव्य है, क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल नामक जीवाणु की खोज सन 1935 ई० में हुई थी जबकि सन 1978 ई० में इस के संक्रमण से बीमारी पैदा हुई। अनुमान है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में, स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल के संक्रमण के इलाज पर ही प्रत्येक वर्ष लगभग 1.5 अरब अमेरिकी डॉलर तक की लागत में वृद्धि हो जाती हैं।

इन्फेक्शन कंट्रोल एंड हॉस्पिटल एपिडेमियोलॉजी पत्रिका के अध्ययन के अनुसार क्लॉस्ट्रिडियम डिफिसाइल के संक्रमण की अस्पताल के पर्यावरण में फिर से वापस फैलने की प्रबल संभावना रहती है, क्योंकि अस्पतालों की लॉन्डरिंग में धुलाई के लिए आए बिस्तरों और अन्य लिनन तथा दूसरी स्वास्थ्य सुविधाओं पर उन व्यवसायों के माध्यम से जैसे कि जो लोग किराए पर लिनन एकत्र करते हैं, दूसरे लॉन्डरर और तीसरे जो उनका पुनर्वितरण करते हैं, पर संक्रमण का प्रकोप बना रह सकता है और वे इस संक्रमण का एक स्रोत भी बन सकते हैं।

अस्पतालों और होटलों में बहुत समानता होती है। अस्पतालों और होटलों में बहुत अधिक अपेक्षा रखने

और उत्तरोत्तर जानकार एवं विद्वान ग्राहक आते हैं। इन में जिम्मेदारी के विभिन्न स्तरों के साथ श्रमिकों की एक बड़ी पदानुक्रम श्रेणी व्यवस्था और उत्तरोत्तर भुगतान राशि से सहबद्ध ग्राहक मूल्यांकन होता है। वैसे अस्पताल भी होटल उद्योग की प्रथाओं का अनुकरण कर सकते हैं, जैसे कि प्रवेश से पहले की अवधि, एडमिशन, चेक-इन, देखभाल करने वालों और मरीजों के बीच का संवाद-संचार, ग्राहक संतुष्टि और पोस्ट-डिस्चार्ज फॉलो-अप इत्यादि। परन्तु, अस्पतालों से होटल क्या सीख सकते हैं? ज्ञात हो, लिनन लांड्री, वर्दी और अन्य कई तरह की सुविधा सेवाएं इन दोनों उद्योगों में एक समान है जो दोनों की ही सेवा करती हैं। उनके परिप्रेक्ष्य से, दोनों ही आगंतुकों की देखभाल के साथ काम कर रहे हैं, जबकि इन को अपने-अपने स्तर पर उच्च लागत का सामना करना पड़ रहा है। संचालन को अधिक कुशल और लागत प्रभावी बनाने के लिए, होटल अस्पतालों से कई कपड़े धोने से संबंधित कई प्रथाओं को सीख सकते हैं या उधार ले सकते हैं।

कपड़े धोने का संचालन केंद्रीकृत:

यह अनुमान है कि अमेरिकी अस्पतालों के 90 प्रतिशत तक कपड़े धोने का संचालन 'केंद्रीकृत' है। हालांकि, अब कई अस्पतालों ने स्वयं अपने परिसर में कपड़े धोने की सुविधाओं के संचालन के काम

को कम कर दिया हैं। ज्यादातर मामलों में, यह काम एक वाणिज्यिक लिनन सेवा के लिए आउटसोर्स किया जाता है जिसमें उच्च क्षमता वाले उपकरण होते हैं जो अस्पतालों के संसाधनों के उपयोग को कम करते हैं और कपड़े धोने में उच्चतम संभावित मितव्ययता प्राप्त करते हैं। लिनन और वर्दी सेवाओं में पर्याप्त मात्रा में काम और पर्याप्त संख्या में ग्राहक भी उपलब्ध है। कुछ लाँड्री सेवा-प्रदाता तो कम से कम संभव लागत प्रति पौंड पर कपड़े धोने के लिए विभिन्न उद्योगों से 1000 से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान करते हैं।

इस तरह के लाँड्री सेवा-प्रदाता मॉडल होटल व्यवसाय में तेजी से उभर रहे हैं। लाँड्री आउटसोर्सिंग यूरोप में अच्छी तरह से स्थापित है और संयुक्त राज्य अमेरिका में भी गति पकड़ रही है। कुछ अमेरिकी शहरों और कनाडा मे, एक लिनन सेवा का उपयोग करना आदर्श बन रहा है। अस्पताल द्वारा लाँड्री सेवा को आउटसोर्स करके वे लाँड्री के लिए तय की गई जगह का उपयोग रोगियों की डायग्नोस्टिक सेवाओं अर्थात रोगियों के रोग और उन की समस्याओं को पहचानने और उपचारात्मक कार्यों के लिए समर्पित करके रोगियों की बेहतर सेवा कर सकते हैं। इस तरह, अस्पताल अपने एक लागत केंद्र के स्थान को एक नए राजस्व उत्पादन केंद्र को प्रतिस्थापित कर लेते हैं। अस्पताल प्रशासकों को भी विश्वास होता है कि उन्हें अपने परिसर में कपड़े धोने की अपेशा लाँड्री सेवा को आउटसोर्स करने के विकल्प की जरूरत है और वे उपयुक्त साफ लिनन स्टॉक बनाए रखने के लिए तेजी से इसी का चयन करते हैं। होटल भी इस स्थान को अतिथि सुख-सुविधा के

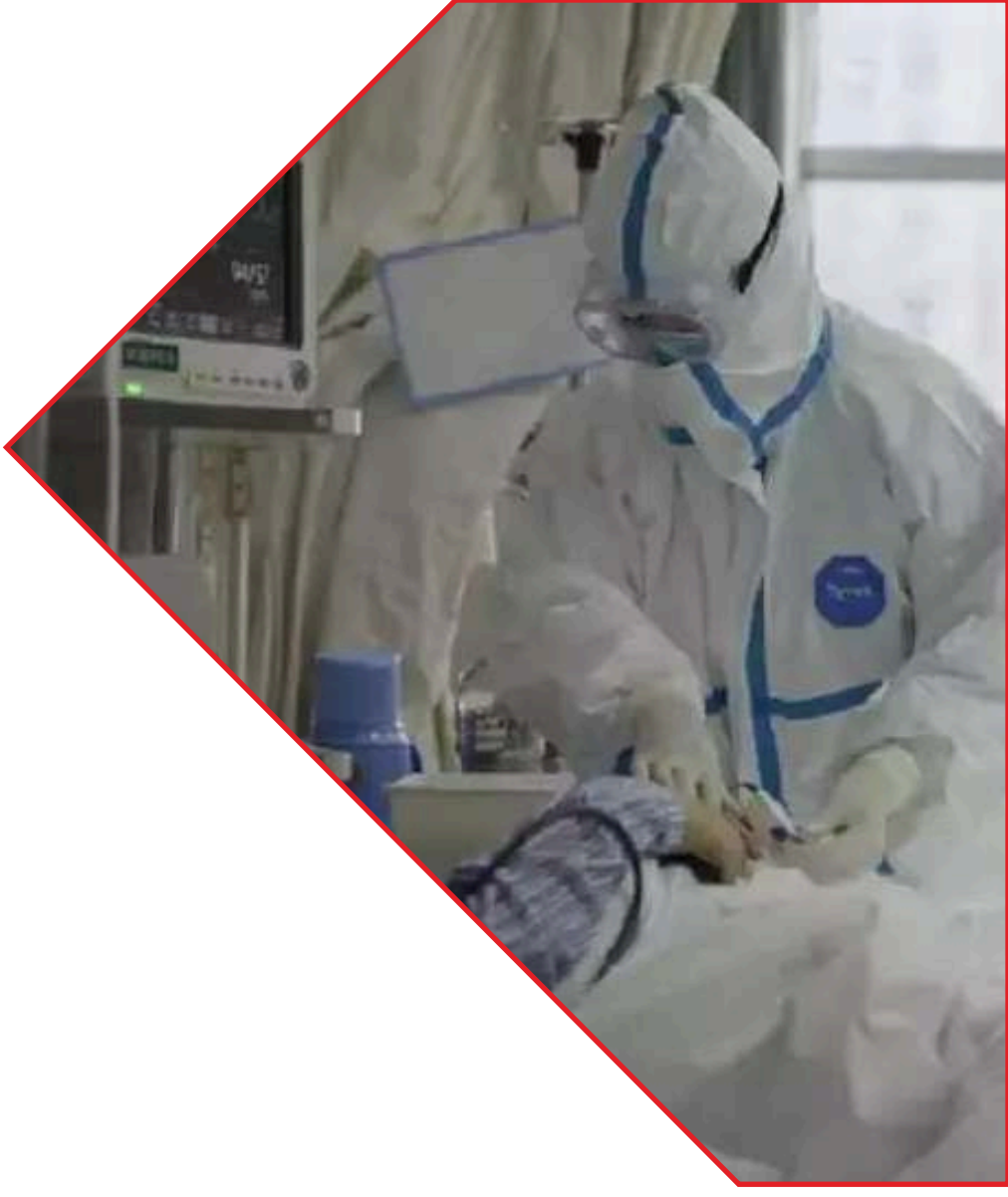

लिए समर्पित करके अतिथि के अनुभव में सुधार कर सकते हैं।

होटलों में लिनन सेवाओं, लॉन्डरिंग और संबंधित पिकअप डिलीवरी के लिए अनुबंध करने वाले प्राय: इन सेवाओं का आउटसोर्स करते हैं । होटलों का संपत्ति विभाग अपनी खुद की लिनन सूची में खरीददारी जारी रखता है। अस्पताल इस अभ्यास को कम करके अनुबंध के हिस्से के रूप में कपड़े धोने की लॉन्डरिंग सेवा प्रदाता से लिनन किराए पर लेने का विकल्प चुन रहे हैं। इससे लागत कम हो जाती है और होटल के कपड़े धोने की सेवा प्रदाता पर पर्याप्त सूची (पर्याप्त पैरा स्तर) सुनिश्चित करने का बोझ होता है। होटलों के मालिक कभी-कभी चिंतित होते हैं कि किराये के लिए उन्हें निम्न गुणवत्ता वाले लिनन का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, लेकिन होटल सेवा के स्तर पर मेल खाने के लिए गुणवत्ता वाले लिनन की एक श्रृंखला उपलब्ध रखनी पड़ती है-बजट से लेकर लक्जरी तक। यही वजह कि होटल अक्सर लॉन्डरिंग और लिनन सेवाओं के साथ अनुबंध संबंधित पिकअप और डिलीवरी आउटसोर्स करना शुरू कर देता है। सबसे बढ़ कर अस्पतालों में स्वच्छता रखने के साथ-साथ अपने सभी कर्मचारियों के लिए तय मानकों के अनुसार हैण्डवॉशिंग और डिसिन्फेक्टन्ट अर्थात् निस्संक्रामक करने की ट्रेनिंग देनी चाहिए।

* लेखक हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में वरिष्ठ पर्यावरण अभियंता हैं।

GEPIL
PROTECTING FUTURE

Inspiring Youth of Today

1st

… private sector initiative to receive ISO 14001 certification for integrated common hazardous waste management facility

… to establish stabilisation and solidification treatment for heavy metal bearing wastes

… to setup recovery based waste-to-energy incineration plant

… to make largest ZLD for textile effluent at cluster level

… to establish eco industrial park

… to introduce finger print and quick check analysis of waste

… in asbestos disposal and management

… to introduce software based hazardous waste vehicle tracking system (GPS)

… to setup waste-preparation / AFRF for hazardous waste co-processing

Roar Studios

GEPIL is a knowledge-based environment & infrastructure company providing sustainable solutions;

Concept to commissioning & operations on BOO / BOOT / EPC basis.

Experts in 3R; Eco-towns; Water – Wastewater treatment/recycling;

Recovery and/or disposal of hazardous waste / SW / E Waste / Alternate Fuel / nvironmentally Safe Ship Recycling.

GEPIL
PROTECTING FUTURE

GUJARAT ENVIRO PROTECTION & INFRASTRUCTURE LTD.
A Luthra Group Company

252/2 Pandesara GIDC, Surat Gujarat India.
T +91 261 289 0606-7-8 | F +91 261 289 0600
E gepil@luthraindia.com
www.gepil.in
www.luthraindia.com

'जय पर्यावरण, जय पर्यावरण'

सुभाष शर्मा

नील गगन, निर्मल-निर्मल,
जल धारायें, बहें अविरल।
पवन हिलोरें करें सन-सन,
झरनें झरें, करें कल-कल।
किरणों को परावर्तित करते,
झरनों के दर्पण।
जय पर्यावरण, जय पर्यावरण।।

वनस्पति वन-वन लहरायें,
जंगल-जंगल मंगल छायें।
आनन्दित हों मन बहलायें,
लिपट-लिपट पेड़ों से लतायें।
सुख समृद्धि करें अर्पण।
जय पर्यावरण, जय पर्यावरण।।

तन-मन झंकृत करें हवायें,
बादल रिमझिम रस बरसायें।
सप्तरंग उतरें धरती पर,
सृष्टि को रंगीन बनायें।
क्षण-क्षण पुलकित हों कण-कण।।
जय पर्यावरण, जय पर्यावरण।

सृष्टि को स्वीकार करें हम,
पल-पल प्रकृति विहार करें हम।
कभी प्रेम बन्धन न टूटे,
सब जीवों से प्यार करें हम।
हो सब द्वेष विकार हरण।
जय पर्यावरण, जय पर्यावरण।।

खुशहाली आंगन-आंगन हो,
चहुंओर नियंत्रित प्रदूषण हो।
मन्द-सुगन्ध निरन्तर मचले,
आनन्दित सब वन-उपवन हो।
जन-जन हो प्रकृति शरणम्।
जय पर्यावरण, जय पर्यावरण।

*सुभाष शर्मा जाने-माने कवि, गीतकार एवं लेखक हैं।

पृथ्वी को बचाये, भविष्य सुरक्षित करें

Courtesy:

Aggarwal Fibers Pvt. Ltd.

Mfg. of: Export Quality Open End Cotton Yarn
Pasina Kalan Road, Panipat (Haryana) India
Ph.: +91 180 4009303, 4009304 | Mob. 98120 22910, 98125 00016
Email.: sanjayaggarwal061@gmail.com, aggarwalfibers@gmail.com

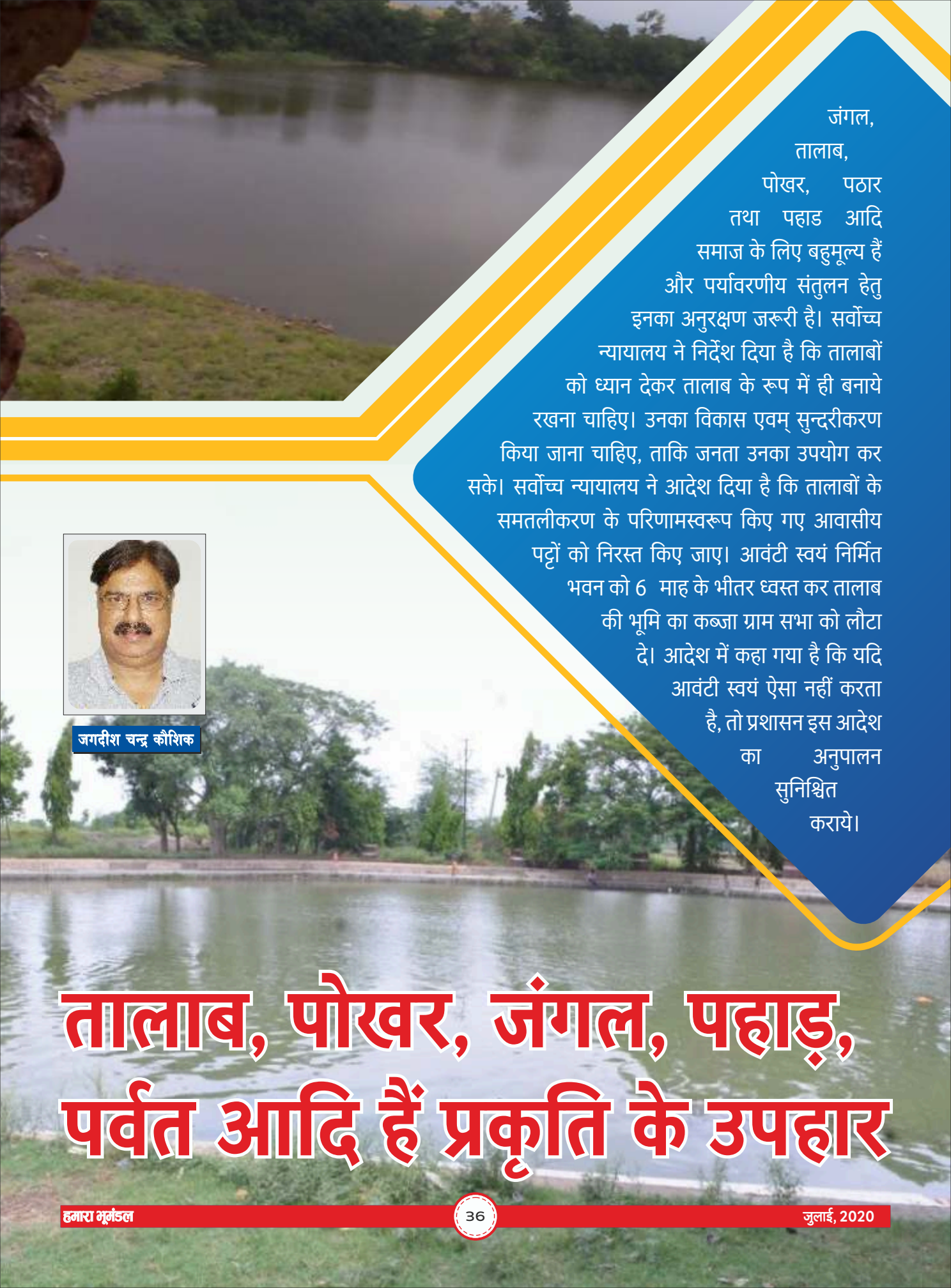

जगदीश चन्द्र कौशिक

जंगल, तालाब, पोखर, पठार तथा पहाड आदि समाज के लिए बहुमूल्य हैं और पर्यावरणीय संतुलन हेतु इनका अनुरक्षण जरूरी है। सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिया है कि तालाबों को ध्यान देकर तालाब के रूप में ही बनाये रखना चाहिए। उनका विकास एवम् सुन्दरीकरण किया जाना चाहिए, ताकि जनता उनका उपयोग कर सके। सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिया है कि तालाबों के समतलीकरण के परिणामस्वरूप किए गए आवासीय पट्टों को निरस्त किए जाए। आवंटी स्वयं निर्मित भवन को 6 माह के भीतर ध्वस्त कर तालाब की भूमि का कब्जा ग्राम सभा को लौटा दे। आदेश में कहा गया है कि यदि आवंटी स्वयं ऐसा नहीं करता है, तो प्रशासन इस आदेश का अनुपालन सुनिश्चित कराये।

तालाब, पोखर, जंगल, पहाड़, पर्वत आदि हैं प्रकृति के उपहार

लगभग एक हजार साल पहले एक ईरानी विद्वान और इतिहासकार 'अबू रियान मुहम्मद इब्न अहमद अल-बिरुनी' जिसको लोग आज 'अल-बिरूनी' के नाम से जानते हैं, सन 1017 ई० में भारत आया था। उसने बहुत ही बारीकी से यहां की चीजों और जगहों को देखा तथा उनके बारे में ऐतिहासिक संदर्भों के लिए लिखा। अल-बिरूनी ने भारत के तालाबों के बारे में भी लिखा। उसके अनुसार भारत के लोग तालाब बनाने में बहुत ही माहिर हैं। वे बड़े-बड़े एवं भारी पत्थरों, लोहे के कुण्डों और सरियों को जोड़कर तालाब के चारों ओर चबूतरों का निर्माण करते हैं। उन चबूतरों के बीच में ऊपर से नीचे तालाब तक जाती हुई सीढ़ियों की लंबी-लंबी कतारें होती हैं तथा लोगों के उतरने चढ़ने के रास्ते भी अलग-अलग होते हैं जिससे तालाबों पर भीड़ लगने से लोगों को कभी भी परेशानी नहीं होती है।

अल-बिरूनी लिखते हैं कि भारत के अधिकांश गांवों के लोग बारिश की हर बूंद की कीमत जानते हैं, इसलिए यहां पर पानी की कोई कमी नहीं है। इस देश में पानी को इक्कठा करने के लिए जगह-जगह तालाब और जोहड़ बनवाए जाते हैं। तालाब यहां के लोगों की एक सांझी जरूरत है। इसलिए, उन का इंतजाम भी सभी मिलजुल ही करते हैं, चाहे वह कोई व्यक्ति व्यापारी हो अथवा कोई मजदूर हो। इन तालाबों में से कुछ पानी जमीन सोख लेती है जो भू-जल में मिलकर वहां की जमीन में खोदे हुए कुओं और बावडिय़ा में भी पहुंच जाता है जिससे आसपास की जमीन भी नम और उपजाऊ हो जाती है। वे लिखते हैं कि भारत के घरों में भी बारिश के पानी को इकट्ठा करने का इंतजाम है।

जाहिर है, पानी संरक्षण से जुड़े भारत के पुराने रीती-रिवाज आज भी कई सौ साल पुराने पानी के स्रोत के रूप में कहीं-कहीं पर मौजूद हैं। कुएं, बावड़ी और तालाब जैसे जल-स्त्रोत आज भी बहुत से लोगों की पानी की जरूरतें पूरी करते हैं। कई जगहों पर तो आज भी बारिश से तालाब भरने की खुशी में उसके आस-पास मेले जैसा माहौल हो जाता है। कई संस्थाएं देश में पानी के इंतजाम में अब भी लगी हुई हैं। मुमकिन है कि पानी को सहेजने में वे बुजुर्ग लोगों से जानकारी भी लेती हों। यह भी संभव है कि

पानी के पुराने रीती–रिवाजों के अनुरूप कुछ संस्थाएं देश में जर्जर हुए तालाबों की मरम्मत भी करती हों और नए तालाब भी बनाती हों। तकनीकी परिभाषा के अनुसार तालाब एक कृत्रिम या प्राकृतिक जलाशय होता है, जिसका सतही परिमाप 1 वर्ग मीटर से लेकर 5 एकड़ अथवा 2 हेक्टेयर के बीच में हो सकता है और उसमें वर्षभर में कम से कम चार महीने तक पानी भरा रहता है।

परन्तु, पानी के ये प्राकृतिक जल-स्त्रोत– तालाब अब दिनोंदिन सिमटते जा रहे हैं। उनकी जगह कॉलोनियां बस गई हैं, जो कि चिंता का विषय है। सार्वजनिक उपयोग की सांझी जमीन पर अवैध कब्जों के मामले जिस गति से बढ़ रहे हैं, उससे तालाबों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। परन्तु, इन सब के बीच देश के सर्वोच्च न्यायालय का एक फैसला अब तालाबों को बचाने का एक सशक्त शासनादेश बन गया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय भारत भर की झीलों, तालाबों और अन्य सार्वजनिक लोकहित के प्राकृतिक संसाधनों की भयानक स्थिति को पीड़ा से देख रहा है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दृढ़ता से यह माना है कि झीलों और ऐसे अन्य लोकहित के संसाधनों को वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लाभ, सभी के लिए पानी की सुरक्षा का निर्माण करने, पारंपरिक आजीविका और जैव विविधता के संरक्षण के लिए झीलों, तालाबों और ऐसे अन्य लोकहित के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित किया जाना चाहिए।

श्री हिंचलाल तिवारी बनाम कमला देवी और अन्य' (सिविल अपील संख्या-4787/2001) में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने उक्त आदेश देते हुए कहा है कि यहां इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि समुदाय के भौतिक संसाधन – जंगल, तालाब, पोखर, पहाड़ी, पर्वत, झील इत्यादि प्रकृति के उपहार हैं। ये प्राकृतिक संसाधन धरती पर नाजुक पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हैं। अत: इनके लिए एक ऐसा उचित और स्वस्थ वातावरण संरक्षित करने की आवश्यकता है जिससे लोग जीवन का आनंद उठा

Courtesy:

BAPOLI ZONE INDUSTRIES ASSOCIATION
BZIA
PANIPAT

M/s Sachdeva Home Furnishing,
Sanoli Road, Village-Kurad,
Panipat-132103 Haryana

सकें। ऐसा वातावरण संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत गारंटीशुदा अधिकार का भी सार है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि सरकार एवं राजस्व प्राधिकरणों आदि प्रतिवादिओं ने जब यह देखा है कि तालाब का अनुपयोग हो रहा है, तो उन्हें उनके लिए बेहतर वातावरण विकसित करने पर अपना ध्यान देना चाहिए था। भौतिक संसाधनों का बेहतर वातावरण एक ओर, पारिस्थितिक आपदा को रोकता है जबकि दूसरी ओर जनता को बड़े पैमाने पर लाभ प्रदान करता है।

उक्त मामले में एक तालाब को सार्वजनिक उपयोग की भूमि के तहत समतलीकरण कर यह घोषित कर दिया गया था कि वह अब तालाब के रूप में उपयोग में नहीं है। लिहाजा, तालाब की उस भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु आवंटित कर दिया गया था। उक्त मामले में 25 जुलाई 2001 को सर्वोच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि जंगल, तालाब, पोखर, पठार, झील तथा पहाड़ आदि समाज के लिए बहुमूल्य हैं और पर्यावरणीय संतुलन हेतु इनका अनुरक्षण करना जरूरी है।

सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश दिया है कि तालाबों पर ध्यान देकर उनको तालाब के रूप में ही बनाये रखना चाहिए। उनका विकास एवम् सुन्दरीकरण किया जाना चाहिए, ताकि जनता उनका उपयोग कर सके। सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिया है कि तालाबों के समतलीकरण के परिणामस्वरूप किए गए आवासीय पट्टों को निरस्त किया जाए। आवंटी स्वयं निर्मित भवन को 6 माह के भीतर ध्वस्त कर तालाब की भूमि का कब्जा ग्राम सभा को लौटा दे। आदेश में कहा गया है कि यदि आवंटी स्वयं ऐसा नहीं करता है, तो प्रशासन इस आदेश का अनुपालन सुनिश्चित कराये।

तालाब, पोखर आदि के अनुरक्षण के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के उक्त आदेश का संज्ञान लेते हुए उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने नये सिरे से एक महत्वपूर्ण शासनादेश जारी किया। आवासीय प्रयोजन के लिए आरक्षित भूमि को छोडकर किसी अन्य सार्वजनिक प्रयोजन के लिए आरक्षित भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु आबादी में परिवर्तित किया

जाना अत्यन्त आपत्तिजनक है। सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश के बाद उत्तर प्रदेश में हजारों तालाबों को अतिक्रमण से मुक्त कराने का अभियान चलाया गया। ग्राम समाज की जमीन एवं तालाबों पर कब्जा करने वालों की अब खैर नहीं होगी। जिलाधिकारियों ने समिति गठित कर उसे कार्रवाई का अधिकार सौंपते हुए दोषियों पर एफआईआर कराने के निर्देश दिए हैं। सन 2001 में सुप्रीम कोर्ट ने सभी राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि वे अपने इलाकों में तालाबों पर से अवैध कब्जा हर हाल में हटाएं और सन 2003 में केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय ने भी निर्देश जारी कर कहा था कि शहरी इलाकों में तालाबों को संपदा माना जाये और उनकी सुरक्षा की जाए।

भारत में हजारों पारंपरिक जल निकाय (पोखर, जलाशय, झील, सरोवर, ताल, बाड़ी, तालाब) हैं जिन्हें व्यापक रूप से आर्द्रभूमि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और ये जैव विविधता के समृद्ध भंडार हैं। विश्व स्तर पर इन पारंपरिक जल निकायों का यद्यपि परिदृश्य 3 प्रतिशत से भी कम है, लेकिन फिर भी ये दुनिया के सभी महासागरों की तुलना में अधिक कार्बन को अवशोषित करते हैं। भारत के विभिन्न समुदायों ने इन जल निकायों को बहुत महत्व दिया है। देश के बंटवारे के समय जब पश्चिमी पंजाब से विस्थापित होकर लोग यहां आए थे तो उस समय भी यहां के प्रत्येक गांव और शहरों में तालाब और जोहड़ होते थे। रविवार के दिन तो इन तालाबों पर बड़ी रौनक रहती थी क्योंकि इस दिन गांवों और छोटे शहरों की औरतें इन तालाबों पर कपडे धोती थीं और उनको वहीं पर सुखाती भी थीं। तालाबों पर लोगों का जमघट लगा रहता था, परन्तु उन तालाबों का अब कोई नामों-निशान नहीं बचा है। जाहिर है, अब तालाबों को अतिक्रमणों से छुड़ा कर उन्हें संरक्षित करने के लिए गंभीर कदम उठाने की आवश्यकता है। जल निकायों की बहाली के लिए नागरिकों में

Courtesy:

SHIV SHAKTI EXPORTS

Manufacturer and Exporter of :
All kinds of Home Furnishing Producst

PO Box # 180 Passina Kalan Road, Panipat-132103
Tel.: 9996105401 to 403
Email: account@shivshaktiexports.org

पर्यावरण और पारिस्थितिक तंत्र का सही ज्ञान होना भी आवश्यक है।

देश के 40 प्रतिशत क्षेत्र में बारहों महीने ही ज्येष्ठ माह जैसी गर्मी रहती है। लिहाजा, यहां के लोगों को पानी की किल्लत के लिए गर्मी के मौसम का भी इंतजार नहीं करना पड़ता है क्योंकि इन क्षेत्रों में हमेशा ही पानी की कमी होती है। भारत सरकार ने संसद में माना है कि देश की 11 प्रतिशत आबादी आज भी पीने के साफ पानी से वंचित है। पहले लोग स्थानीय स्रोतों से ही अपने खेतों और पेयजल के लिए स्वयं पानी जुटाते थे। परन्तु, तथाकथित आधुनिक खेती के लिए लोगों ने पानी के अपने सभी प्राकृतिक जल- संसाधनों का दोहन कर लिया। सम्पूर्ण देश, विशेषकर उत्तर भारत के पंजाब और हरियाणा जैसे प्रगतिशील राज्यों के किसानों ने अपने खेतों की सिंचाई के लिए अंधाधुंध तरीके से ट्यूबवेल लगाए हैं जिनके चलते धरती के नीचे का भूजल भी गर्त में पहुँच गया। आज ये लोग या तो अपने ट्यूबवेलों की गहराई को और बढ़ा कर उनमें ज्यादा पॉवर की मोटरें डालने पर मजबूर हैं या उन्हें भी वर्षा की बाट जोहनी पड़ती है। जल की इस समस्या के निदान के लिए हमारे समाज को एक बार फिर से प्राकृतिक जल-स्रोतों को आबाद करना होगा और देश भर में उपेक्षा के शिकार हो रहे इन जल-स्त्रोतों जैसे तालाबों, कुंओं, बावडियों और नदियों आदि का संरक्षण करना होगा।

सदियों से तालाब आदि जल-स्त्रोत भारतीय लोक की संस्कृति का अभिन्न अंग रहे हैं। परन्तु, इनकी उपेक्षा का ही परिणाम है कि आज बहुत से तालाबों पर अवैध कब्जे हैं और ये कब्जे सरकारी अमले की मिलीभगत के बिना संभव ही नहीं थे। जाहिर है, अब इन्हें सरकारी अमले के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता है, बल्कि तालाबों को सहेजने का जिम्मा समाज के हरेक वर्ग को उठाना होगा। गांवों के तालाबों की सफाई और उनको गहरा करने की जिम्मेदारी भी ग्रामवासियों की होगी। ये दोनों काम न तो ज्यादा खर्चीले हैं और न ही इनमें भारी-भरकम मशीनों की जरूरत होती है। इस के अलावा, तालाबों

में सालों साल से सड़ रही पत्तियों और अन्य अपशिष्ठ पदार्थों की गाद किसानों के लिए एक बेहतर किस्म की खाद के तौर पर काम आ सकती है। गावों के इन तालाबों के रखरखाव से इनके पानी का प्रयोग खेतों की सिंचाई से लेकर मनुष्यों के विविध जरूरतों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

तालाबों के अस्तित्व पर सबसे बड़ा खतरा उनपर होने वाले नाजायज कब्जे और दबंगों द्वारा किया जाने वाला अतिक्रमण है जिसे वे बड़ी ही चालाकी और धूर्तता से अंजाम देते हैं। तालाबों की जमीन पर कब्जा करने के लिए वे बाकायदा तालाबों को सरकारी कर्मचारियों से मिलीभगत करके सुखाते हैं। पहले इनके तटबंधों को तोड़ दिया जाता है ताकि इनका पानी बहकर बाहर निकल सके। वे रातोंरात तालाबों का पानी निकाल देते हैं और उसके बाद इनमें पानी की आवक के रास्तों को रोका जाता है। गांवों में तो तालाबों के नीचे की उपजाऊ जमीन के लालच में उनपर कब्जे होते हैं, जबकि शहरों में भू-माफिया तालाबों की जमीन पर कालोनियां के लिए नगर-परिषदों और नगर निगमों के अधिकारियों और क्रमचारियो से मिलकर उन पर कब्ज़ा कर लेते हैं। तालाबों पर कब्जों की ये कारस्तानियां पूरे देश में कमोबेश एक जैसी ही हैं। देश का कोई भी राज्य ऐसा नहीं है, जहां इन जल निकायों पर कब्जे नहीं हुए हों। राजस्थान में उदयपुर से लेकर जैसलमेर तक, तेलंगाना के हैदराबाद हुसैनसागर झील से लेकर हरियाणा की सुल्तानपुर झील अथवा तमिलनाडु में चेन्नई की पुलिकट झील, सभी जगह नाजायज कब्जों की एक जैसे ही कहानी है। परन्तु, तालाबों के रूप में इन पारंपरिक जल-प्रबंधन के स्त्रोतों के नष्ट होने का खामियाजा अब तमाम समाज को भुगतना पड़ रहा है। संभवत: उन लोगों को भी अब पछतावा होता होगा जिन्होंने अपनी निष्क्रियता के चलते इन तालाबों एवं झीलों पर अतिक्रमण और कब्ज़ा होने दिया।

बिहार जैसे भूमि से घिरे प्रदेश की अर्थव्यवस्था का एक बहुत ही बड़ा हिस्सा

तालाब और उसके उत्पादों पर निर्भर करता है। मिथिलांचल के 22 ज़िलों के लाखों लोग मखाना और मछली से जुड़े उद्योगों पर अपने जीवन यापन के लिये निर्भर हैं।

बिहार राज्य में कुल तालाबों की संख्या 97982 है जिसमें सरकारी तालाब 31, 254 है, जबकि निजी तालाबों की संख्या 66728 है। तालाबों के मामले में मधुबनी ज़िला अग्रणी है जहां 4864 सरकारी तालाब हैं। वहीं निजी हाथों में कुल 5891 तालाब हैं। सबसे कम तालाब जाहानाबाद में हैं। जहां सरकारी हाथों में 123 और निजी हाथों में कुल 23 तालाब हैं। दरभंगा और मधुबनी के कई ऐतिहासिक तालाब सरकार की उपेक्षा और भूमि मफियाओं के बढ़ते आतंक के चलते दम तोड़ रहे हैं।

तालाबों पर कब्जा करना इसलिए आसान है क्योंकि पूरे देश के तालाब अलग-अलग महकमों के पास हैं जैसे कि राजस्व विभाग, वन विभाग, पंचायत, मछली पालन, सिंचाई, स्थानीय निकाय, पर्यटन..शायद और भी हों। कहने की जरूरत नहीं कि तालाबों को हड़पने की प्रक्रिया में स्थानीय असरदार लोगों और सरकारी कर्मचारियों की भूमिका होती ही है। अभी तालाबों के कई सौ मामले राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के पास हैं। पिछले 62 सालों में गुरुग्राम में 389 जल निकाय लुप्त हो चुके हैं। जिला प्रशासन द्वारा संकलित एक अध्ययन रिपोर्ट, जिसे 'राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल' में प्रस्तुत किया गया है, के अनुसार गुरुग्राम में 1956 के राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार 640 जल निकाय थे, जबकि वर्तमान राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार यहाँ अब मात्र 251 जल निकाय ही मौजूद हैं। एनजीटी ने हरियाणा सरकार को सभी मौजूदा जल निकायों को सरकारी स्वामित्व के तहत रखने के निर्देश दिए हैं। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि गुरुग्राम जिले में 291 गांवों में से 253 गांवों में ही जल निकाय मौजूद हैं।

चार साल पहले चेन्नई की झीलों या तालाबों के स्थान पर आवासीय या वाणिज्यिक भवनों के निर्माण होने से ही वहां आई बाढ़ पारंपरिक जल निकायों की अनदेखी का ही

परिणाम था। जाहिर है, सभी पारंपरिक जल निकायों को बचाने और देश भर के शहरों एवं कस्बों के तालाबों को बचाने के लिए ठोस तथा बहु-हितधारक प्रयास किए जाने की जरूरत है।

हरियाणा के अहीरवाल की राजनीतिक राजधानी व महाभारतकालीन शहर रेवाड़ी स्थित प्राचीन व ऐतिहासिक सरोवर प्रशासनिक उपेक्षा एवं सामाजिक संवदेनशून्यता के चलते आज धूल में मिलते जा रहे हैं। तिल-तिल कर नष्ट हो रहे कलात्मक कारीगरी के ये नायाब नमूने, ये सरोवर व ऐतिहासिक स्थल देखरेख के अभाव में कूड़ाघर बन गए हैं। शहर का प्राचीनतम ऐतिहासिक सरोवर 'सोलह राही' लगभग पूरी तरह से नष्ट हो चुका है, वहीं तेज सरोवर, 'बड़ा तालाब' एवं 'नंद सरोवर', छोटा तालाब प्रशासनिक व सामाजिक निष्ठुरता से जद्दोजहद करते अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते प्रतीत होते हैं। इन ऐतिहासिक धरोहरों की बदहाली का आलम समाज एवं प्रशासन से छिपा नहीं है, पर सब कुछ जानते हुए भी सब चुप बैठे हैं।

रेवाड़ी शहर के सेक्टर एक, हाउसिंग बोर्ड कालोनी व महाराणा प्रताप चौक के बीच स्थित प्राचीनतम तालाब सोलह राही तालाब के अब मात्र अवशेष ही बचे हैं। कहा जाता है कि 17वीं व 18वीं सदी के मुगल साम्राज्य की दास्तान का मूक गवाह रहा यह तालाब जनता ने सामूहिक प्रयासों से चंदा इकट्ठा करके बनवाया था। समाजसेवी गंगाराम भगत की देखरेख में निर्माण कार्य हुआ था। उस समय सोलह मार्ग यहां आकर मिलते थे, इसलिए इसका नाम सोलह राही पड़ गया। यहां के बुजुर्ग बताते हैं कि शहर का पानी खारा था, इसलिए लोग सोलह राही स्थित कुओं से ही पेयजल लाते थे।

परन्तु, रखरखाव के अभाव में आज इसके अवशेष भी समाप्ति की ओर हैं। आज यह तालाब पूरी तरह से तबाह हो चुका है। जहां एक ओर इसकी प्राचीन कलात्मक दीवारें ढह चुकी हैं, वहीं आजकल कहीं झुग्गियां तो कहीं मढ़ी आदि बनाकर इस पर चहुं ओर

से अवैध कब्जे किए जा रहे हैं। इसमें विभिन्न मार्गों से आने वाले पानी के मार्गों को भी बंद किया जा रहा है। इसकी चारदीवारी जगह-जगह से तोड़कर इसमें से मिट्टी को उठाया जाना, खुले शौचालय के रूप में इस्तेमाल करना, इसके प्राचीन स्वरूप से छेड़छाड़ करने तथा इसमें जगह- जगह गोबर के पथवारे बनाना इस प्राचीन धरोहर की खूबसूरती से खिलवाड़ करना है।

एक आंकड़े के अनुसार, देश में आजादी के समय लगभग चौबीस लाख तालाब थे। बरसात का पानी इन तालाबों में इकट्ठा हो जाता था, जो भूजल स्तर को बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी होता था। अकेले मद्रास प्रेसीडेंसी में ही पचास हजार और मैसूर राज्य में उनतालीस हजार तालाब होने की बात अंग्रेजों का राजस्व रिकार्ड दर्शाता है। दुखद बात है कि अब देश भर में हमारी तालाब-संपदा अस्सी हजार पर सिमट गई है। उत्तर प्रदेश के पीलीभीत, लखीमपुर और बरेली जिलों में आजादी के समय लगभग एक सौ अस्सी तालाब हुआ करते थे। उनमें से अब बीस से तीस तालाब ही बचे हैं। जो बचे हैं, उनमें पानी की मात्रा न के बराबर है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अंगरेजों के जमाने में लगभग पांच सौ तालाबों के होने का जिक्र मिलता है, लेकिन कथित विकास ने इन तालाबों को लगभग समाप्त ही कर दिया। आजादी के बाद हमारा समाज कोई बीस लाख तालाब चट कर गया है। शहरीकरण की चपेट में लोग तालाबों को ही पी गए हैं और अब उनके पास पीने के लिए कुछ नहीं बचा है। ज्ञात हो, यदि आज बीस लाख तालाब बनवाने हों तो उन पर बीस लाख करोड़ रूपये से कम खर्च नहीं होगा।

तालाब कहीं कब्जे से, कहीं गंदगी से तो कहीं तकनीकी ज्ञान के अभाव से सूख रहे है। कहीं तालाबों को गैर-जरूरी मानकर समेटा जा रहा है तो कहीं ताकतवरों का कब्जा है। ऐसे कई मसले हैं जो अलग-अलग विभागों व मदों में बंट कर उलझे हुए हैं। इतने बड़े प्राकृतिक संसाधन के संरक्षण के लिए स्वतंत्र, अधिकार-संपन्न प्राधिकरण का गठन करना जरूरी है। आधुनिकता की आंधी में तालाब को सरकार की भाषा में 'जल

संसाधन' माना नहीं जाता है, वहीं समाज और सरकार ने उसे जमीन का संसाधन मान लिया। देश भर के तालाब अलग-अलग महकमों में बंटे हुए हैं। जब जिसे सड़क, कॉलोनी, मॉल, जिसके लिए भी जमीन की जरूरत हुई, तालाब को पूरा व समतल बना लिया। आज शहरों में आ रही बाढ़ हो या फिर पानी का संकट, सभी के पीछे तालाबों की बेपरवाही ही मूल कारण है। इसके बावजूद पारंपरिक तालाबों को सहेजने की कोई साझी योजना नहीं है।

प्राचीन तालाबों में निरन्तर मिट्टी, बालू एवं गाद जमा होती रहती है, जिससे उनकी जल-भण्डारण क्षमता उत्तरोत्तर कम होती जा रही है। तालाबों के बाँधों से पानी रिस-रिस कर बाहर निकलता रहता है। कुछ तालाब टूट-फूट गए, जिनमें बाहुबली, धनबली एवं राज्य सरकारों के संरक्षित कृपापात्र दबंग खेती करने लगे हैं। वे गरीब ग्राम निवासियों एवं पशुओं को बूँद-बूँद जल को तरसा देते हैं। बरसात में पानी बरसता रहता है, परन्तु लोगों की अकर्मण्यता और अज्ञानता के कारण यह व्यर्थ बहता चला जाता है। कुंए, तालाब खाली पड़े रहते हैं। उनमें पानी संग्रह करने के उपाय नहीं करते। बरसाती पानी की बर्बादी बैठे-बैठे, सोते-सोते करते रहते हैं, फिर आठ माह चिल्लाते हैं कि खेती को पानी नहीं है, पीने को पानी नहीं है। धीरे -धीरे तमाम प्राचीन तालाबों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है। उदासीनता के चलते इनके संरक्षण के कोई सार्थक उपाय नहीं किए गए।

अगर इन तालाबों को वास्तविक रुप में संरक्षित किया जाता तो पानी की समस्या दूर होती ही, साथ ही जल संरक्षण का उद्देश्य भी पूरा हो जाता। लेकिन किसी को इस ओर ध्यान देने की फुर्सत ही नहीं है। पारंपरिक तालाबों की देखभाल करने वाले लोग किसी और काम में लग गए और अब तालाब सहेजने की तकनीक नदारद हो चुकी है। कहीं तालाबों को जान-बूझकर गैर-जरूरी मानकर समेटा जा रहा है, तो कहीं उसके संसाधनों पर किसी एक ताकतवर का कब्जा है। कहा जाता है कि 'आपो ज्योति रसोऽमृतम' अर्थात

SAVE THE EARTH
GO GREEN

Courtesy:

AGGARWAL DYE CHEM CORP.

Plot No. 69, Sector 25, Part II, HUDA, Industrial Area,
Panipat - 132103 (Haryana) India
Mob.: 99927-55555, 94160 11031
Email: dyechem.pnp@gmail.com

जल ज्योति है, रस है, अमृत है।

जल पृथ्वी के समस्त प्राणियों का जीवन और प्राण है। जल नहीं तो जीवन भी नहीं है, जल के बिना तो पृथ्वी पर वनस्पति नहीं। मरणासन्न जीव को बचाने के प्रयास में ही 'जल, गंगाजल और दूध' पिलाये जाने की परम्परा है। यदि शरीर में पानी नहीं तो प्राणान्त हो जाता है। तात्पर्य यह कि संसार में 'बिन पानी सब सून'। केल के पत्ते, पुष्प, चावल, हल्दी के साथ चुल्लू में जल लेकर मन्त्र पढ़ते हुए संकल्प लिया जाता है। 'अपवित्रो पवित्राः . . . ' जल छिड़ककर ही किया जाता है। प्राणी के दाह संस्कार के अवसर पर घड़े में जल लेकर परिक्रमा लगाते हुए, घड़े में पथरिया से छेद कर जल छितराया जाता है, जिससे कि मृतात्मा विराट सृष्टि के जल में विलीन हो जावे। जल ही जीवन है। शरीर की आभा और कान्ति जल से ही है। शरीर में रक्त, पेड़ों में, फलों में, अनाजों में, पत्तों में, कन्दमूल जड़ों में जो रस प्रवाहमान है, जो स्वाद है, वह सब जल के कारण है। श्रुति के अनुसार अमृत पीने से जीव जिन्दा रहता है। अमर हो जाता है। अमृत में वह शक्ति है कि उसके पीने से मुरझाया-सा पेड़, तालु से चिपकी जीभ और रुधे गले वाला मृत्यु की और अग्रसर मनुष्य, पशु, पक्षी जिन्दा हो जाता है।

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है- 'जल, छिति, पावक, गगन, समीरा। पंच तत्व मिलि रचहि शरीरा।।' अर्थात जल, पृथ्वी (मिट्टी), अग्नि, आकाश और वायु- पांच प्राकृतिक तत्वों के मेल से शरीर की रचना हुई है, जिसमें पांचवां वायु तत्व ऑक्सीजन शरीर में प्राण रूप में है। शरीर रचना में मुख्य घटक तत्व जल है जो शरीर में 90 प्रतिशत होता है तथा लाल एवं सफेद कणों के साथ रक्त रूप में नख से शिख तक हृदय, फेफड़ों की पंपिंग व्यवस्था द्वारा मोटी-पतली सिराओं द्वारा संचरित होता है। शरीर में इस रक्त रूपी जल का संचरण ही शरीर की सजीवता है। इसी रक्त जल में वायु के कण (प्राण वायु) मिलकर शरीर को प्राणमय जीवित बनाये रखते हैं। शरीर में जल

नहीं तो शरीर निर्जीव, वायुविहीन हो जाता है जिसे हम मृत्यु कह देते हैं।

पानी बरसा तो मानव जीवन का विकास हुआ। पानी बरसने से नदी-नाले बने। भूमि पर जल बरसा तो पेड़, पौधे, घास, वनस्पति उत्पन्न हुई। पानी से मानव का जन्म हुआ तो उसने अपने जीने हेतु जल संग्रहण आवश्यक समझा और पानी रोकने के लिए बांधों, तालाबों एवं पोखरों का निर्माण किया। यदि आदमी सुखपूर्वक रहना चाहता है और अपनी विकास प्रक्रिया निरन्तर जारी रखना चाहता है तो उसे बरसाती पानी की बूँद-बूँद को अमृत मानते हुए सहेजकर रखने के लिये तालाबों के निर्माण, जीर्णोद्धार एवं उनके सुधार सुरक्षा पर ध्यान देना होगा। पानी की कमी की समस्या किसी एक व्यक्ति की समस्या नहीं है बल्कि यह समस्या सभी ग्राम, क्षेत्र वासियों एवं समाज की समस्या है जिसे दूर करने के लिये सभी को बिना विभेद जुटना होगा। क्योंकि बिन पानी सब सून होगा, न जीव रहेगा और न जीवन रहेगा।

मानव को विनाश से बचाने का एकमात्र उपाय है पानी को बचाना, उसका संग्रहण और संरक्षण करना। जलस्रोतों, संसाधनों को साफ-स्वच्छ रखना और उन्हें प्रदूषित न होने देना। जल के संग्रहण एवं सुरक्षित- साफ रखने का दायित्व सरकार अथवा किसी शासकीय एजेंसी पर नहीं छोड़ा जा सकता। जल प्रत्येक प्राणी की आवश्यकता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति, परिवार एवं समाज को एकल रूप से और समग्र समूह रूप से जल संग्रहण एवं सुरक्षा कार्यों में निरन्तर जुटा रहना चाहिए। जल का संग्रहण और संग्रहीत जल को स्वच्छ बनाये रखना, जल देव की पूजा है। जल देव एक ऐसे देव हैं कि जिसकी भक्ति एवं सेवा से सभी मनोरथ पूरे हो सकेंगे। जल एवं जल के साधनों का मन्त्र, प्रार्थना, स्तुति तो व्यक्ति स्नान करते हुए प्राचीन काल से गाता रहा है।

DASHMESH JACQUARD & POWERLOOM PVT. LTD.

Approved by Ministry of Textile (Govt. of India) & Eligible manufacturer under T.U.F.S.

ELECTRONIC JACQUARD FOR HIGH-SPEED NEEDLE LOOMS

Directors Team

HARCHARAN SINGH DHAMMU / KULDEEP SINGH DHAMMU / BHUPINDER SINGH DHAMMU / RAJMEET SINGH DHAMMU

Dashmesh
Since 1979

DASHMESH JACQUARD & POWERLOOM PVT. LTD.
Village Chhajpur Khurd, Near Chautala Road bypass,
Sanoli Road, Panipat – 132 103 (Haryana) INDIA

Visit us:- www.dashmeshpowerloom.com
www.warp-tex.com
E-mail :- info@dashmeshpowerloom.com
sales@dashmeshpowerloom.com
Contact :- + 91 -9813193390 – 94
+ 91 -180 – 4001938 / 2660975

पंजाब में थे 22 हजार तालाब, 6600 सूख गए, 7200 डंप यार्ड में बदले,

अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, बठिंडा और पटियाला में 1500 तालाबों पर भूमाफिया का कब्जा

पंजाब राज्य में पिछले 10 वर्षों में लगभग 30 प्रतिशत तालाब पूरी तरह सूख चुके हैं और 50 प्रतिशत तालाब डंप यार्ड में बदल चुके हैं। उनमें कूड़ा-कर्कट, गाद और कचरे के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। राज्य में भूमिगत जल-स्तर की स्थिति भी गंभीर है। प्रदेश के 147 ब्लॉक में से 112 ब्लॉक अत्यधिक जल दोहन के कारण डार्क जोन में आ चुके हैं। यहां का भू-जल स्तर 400 फुट की गहराई तक पहुंच चुका है। इन तालाबों का दूषित पानी ट्रीट हो कर सिंचाई के लिए इस्तेमाल होगा। यहां एक विशेष बात यह भी है कि इस जिले में 586 तलाब की सफाई के लिए मनरेगा मजदूरों को 26875 दिन का रोजगार मिलेगा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पंजाब में १० साल पहले लगभग 22,000 तालाब थे। परन्तु, सरकारी उदासीनता के चलते 6,600 तालाब तो बिल्कुल सूख गए और अब केवल 15,400 तालाब ही बचे हैं। इनमें से भी 50 प्रतिशत तालाब डंप यार्ड बन चुके हैं जबकि, 10 प्रतिशत तालाबों पर भूमाफियों का कब्जा है। जो 40 प्रतिशत तालाब बचे हुए हैं उनको सरकार मनरेगा के जरिए जिंदा तो किए हुए है। इन तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य सरकार मनरेगा के तहत ग्रामीण श्रमिकों को यहां काम देती है। लेकिन, उनकी स्थिति भी फिलहाल इतनी सुखद नहीं है।

दूसरी ओर, ग्रामीण इलाकों की तुलना में शहरी इलाकों के तालाबों की स्थिति इनसे ज्यादा बदतर है। सबसे बढ़ कर, शहरी इलाकों के तालाबों पर नाजायज कब्जे किए जा चुके हैं और अब वहां पर अवैध कालोनियां बस चुकी हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि सरकार इन परंपरागत जलस्रोतों का जीर्णोद्धार करके इनको पुनर्जीवित करे तो इससे न केवल भू-जल स्तर बढ़ेगा बल्कि राज्य में मछली पालन, सिंघाड़े की खेती और सिंचाई को भी बढ़ावा मिल सकता है। हालांकि, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत राज्य में पिछले साल एक पायलट प्रोजेक्ट के तहत जालंधर,

होशियारपुर, नवांशहर, गुरदासपुर, लुधियाना और कपूरथला जिलों के गांवों में तालाबों के माध्यम से 1580 हेक्टेयर कृषि भूमि की सिंचाई का काम जरूर शुरू हुआ था लेकिन, यह अभियान तभी सफल होगा, जब तालाब जीवित रहेंगे।

संत बलबीर सिंह सीचेवाल बताते हैं कि जब उन्होंने सुल्तानपुर लोधी की पवित्र काली बेईं नदी में से गाद निकालकर इसे गहरा किया गया था तो रेतीली मिट्टी आने के बाद भू-जल स्तर बढ़ा था और यह रिचार्ज भी होने लगा था। वैसे, सुल्तानपुर लोधी में कई ट्यूबवेल 35 फुट की कमतर गहराई से भी पानी खींचते हैं, क्योंकि ब्यास का पानी धरती में रिचार्ज होता रहता है। जालंधर के सभी 10 ब्लॉक ब्लैक जोन में हैं। केवल आदमपुर ब्लाक में अभी पानी के संसाधन कुछ बचे हैं, जबकि बाकी सभी जगह पानी का लेवल 400 फुट से भी नीचे गिर चुका है।

गुरदासपुर, पठानकोट और जालंधर में तालाब कैसे मरुस्थल बन रहे हैं, को जानने के लिए हमें वहां जा कर देखना होगा। गुरदासपुर में 1279 ग्राम पंचायतों के तहत 1299 तालाब हैं। विगत दो साल से यहां के किसी भी तालाब का जीर्णोद्धार का काम नहीं हो पाया है। स्थिति इतनी गंभीर है कि इन तालाबों का पानी पशुओं के पीने लायक भी नहीं बचा है। जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी श्री लखविंदर सिंह रंधावा के अनुसार फिलहाल तालाबों में जमा गाद निकालने का काम किया जा रहा है। अभी तक सरकार की तरफ से इनके जीर्णोद्धार के लिए कोई पैसा नहीं पहुंचा है। कोरोना वायरस की महामारी के कारण लॉकडाउन के चलते भी तालाबों की साफ-सफाई के काम में देरी हुई है।

पठानकोट में मनवाल, सियूंटी, कुठेड़ समेत आधा दर्जन गांवों में तालाब सूख चुके हैं और गंदगी से भरे हुए हैं। उनको साफ करवाने वाला कोई नहीं है। मनवाल गांव में तो शौचालयों एवं बाथरूम के पानी की पाइपें तालाब में डाल दी गई हैं जिससे यह पानी न तो पशुओं के पीने के लायक है और न ही उसको सिंचाई में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस जिले में 60 तालाब हैं, जबकि रिकार्ड में 25 ही तालाब बचे हैं। परन्तु, इन तालाबों की भी सुध लेने वाला कोई नहीं है। जालंधर के 890 गांवों में हरेक गांव का अपना तालाब है। इन तालाबों को अब मनरेगा योजना के तहत काम पर लगाए गए श्रमिकों ने नई जिंदगी दी है। श्रमिकों ने तालाबों की मुरम्मत और गाद निकालकर उनका जीर्णोद्धार किया। जहां तक इस जिले के शहरी इलाकों का प्रश्न है, शहर के 25 तालाब विलुप्त हो चुके हैं। परन्तु, जालंधर जिले में अभी कोई ऐसा तालाब नहीं है, जिसका पानी घर में सफाई या किसी दूसरे कामों में इस्तेमाल हो सके। सभी गांवों के तालाब सीवेज के पानी से भरे हैं।

पंजाब में जैसे-जैसे प्रदेश के नगर निगमों की हदों का विस्तार हो रहा है, वैसे ही नए गांव भी शहरों में शामिल होते जा रहे हैं। इन गांवों के पहले अपने तालाब थे जो अब समाप्ति की ओर हैं। इन गांवों में या तो सीवरेज लाइनें बिछ चुकी है या भविष्य में बिछ सकती हैं। परन्तु, इन गांवों की जमीनों पर कॉलोनियां बनाने वालों को अब इन तालाबों की जरूरत महसूस नहीं होती। लिहाजा, या तो इन तालाबों पर कब्जे हो गए हैं या इन पर सरकारी इमारतें, या पार्क आदि बना दिए गए हैं जिससे अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, बठिंडा और पटियाला के शहरी इलाकों में 1500 तालाब पिछले 10 सालों में खत्म हो चुके हैं। यहां जो बचे हैं उन पर भी भू-माफिया का कब्जा है।

कपूरथला जिला के 688 गांवों में 586 तालाब हैं और इनमें से 50 तालाबों को सीचेवाल मॉडल के तहत तैयार करने हेतु इन के दूषित पानी व गाद को निकालने का काम चल रहा है। इसके अलावा, विदेशों में रह रहे कुछ भारतवंशियों ने 112 गांवों में तालाबों के पुनर्जीवित एवं जीर्णोद्धार करने की पहल की है। इन तालाबों के दूषित पानी को पहले ही ट्रीट करके उसको खेतों में सिंचाई के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इसके अलावा, 15 गांवों में ग्राम पंचायतों ने पहले ही सरकार के सहयोग से ट्रीटमेंट प्लांट लगा कर अपने-अपने गांवों के तालाबों का पानी ट्रीट करने की योजना अपना रखी है। 100 गांवों में संत सीचेवाल के सहयोग से काली बेई का पानी ट्रीट कर खेतों की सिंचाई के लिए इस्तेमाल हो रहा है। ग्रामीण विकास व पंचायत विभाग के संयुक्त निदेशक श्री अवतार सिंह भुल्लर ने बताया कि जिला कपूरथला में 586 तालाबों की सफाई का काम चल रहा है। इनमें से 300 की गाद व गन्दा पानी निकाल कर उनकी सफाई की जा चुकी है। श्री भुल्लर ने बताया कि जिले में 50 तालाब सीचेवाल मॉडल के तौर पर तैयार होंगे जिनको एक साल में तैयार करने की योजना है। उन्होंने बताया कि गांवों के इन तालाबों का दूषित पानी ट्रीट हो कर सिंचाई के लिए इस्तेमाल होगा। यहां एक विशेष बात यह भी है कि इस जिले में 586 तलाब की सफाई के लिए मनरेगा मजदूरों को 26875 दिन का रोजगार मिलेगा।उन्होंने बताया कि गांवों के इन तालाबों का दूषित पानी ट्रीट हो कर सिंचाई के लिए इस्तेमाल होगा। यहां एक विशेष बात यह भी है कि इस जिले में 586 तलाब की सफाई के लिए मनरेगा मजदूरों को 26875 दिन का रोजगार मिलेगा।

* साभार दैनिक भास्कर

अरुण कुमार कैहरबा

दुश्मन नहीं, दोस्त हैं वन्य जीव, आओ इन्हें बचाएं !

अपने मास्साब भी कुछ ना कुछ रचते ही रहते हैं। इस बार मास्साब एक वन्य प्राणी गोह के साथ दिखे तो लोगों को भी हैरत हुई। यह क्या इतने खतरनाक माने जाने वाले जीव को मास्साब ऐसे उठाए हुए हैं कि जैसे कोई बच्चा उठा रखा हो। यह जीव नकली भी नहीं है। कमाल की बात यह है कि यह मास्साब को कुछ कह भी नहीं रहा। किस्सा तो आपके मन में भी जिज्ञासा जगा ही रहा होगा। आपको पता ही है कि गर्मी की छुट्टियों व कोरोना वायरस की वजह से स्कूल में बच्चे तो आ नहीं रहे। इसके बावजूद विभाग ने मास्टर-मास्टरनियों को स्कूल में आने का हुक्म दिया है। खैर, अपने मास्साब तो वैसे भी स्कूल के बिना नहीं रह सकते। वे गांव में बच्चों से मिलकर स्कूल आए तो स्कूल का माली दौड़ा-दौड़ा आया और बताया कि गांव के नाले में एक कछुआ दिखाई दे रहा है। मास्साब माली के साथ-साथ हो लिये-चलो दिखाओ कहाँ है। नाले के पास पहुंचे तो एक मुंडी दिखाई दी। बाकी हिस्सा नाले में डूबा हुआ था। मास्साब ने कड़ी मेहनत करके पीड़ा और गुस्से से फन्नाते जिस जीव को निकाला वह माली द्वारा बताया गया कछुआ तो हरगिज नहीं था। वह था चार फुट लंबा सरिसृप प्रजाति का गोह। तड़पती-सी गोह। ओह! ये नाले में कैसे? मास्साब गोह को उठा लाए अपने ठिए-स्कूल में। नाले की गंदगी को धोने के लिए उसे साफ पानी में धोया। उसके शरीर पर तेज घावों के निशान थे, जैसे बल्लम से नुकीले हथियारों से उसे मारा गया हो। मास्साब को स्थिति समझते देर ना लगी। मार से शिथिल पड़ा जीव बीच-बीच में अपना फन उठाता, लेकिन अपने आप को बेबस पाता।

मास्साब ने पशुओं व जीवों के डाक्टर से बात की। डाक्टर के बताए मुताबिक मास्साब ने गोह के घावों पर हल्दी-तेल का मल्हम लगाया। अब देखने वाले तो तमाशा देख रहे थे। मास्साब का मन दुखी था- ये कैसी दुनिया है? जिस इन्सान को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बताया जाता है, वही अपना धर्म आखिर क्यों भूल गया है। निरीह जीवों पर हमलावर होकर वह टूट पड़ता है और जीवों को मार कर अपने आप को बहादुर बताता है। धिक्कार है ऐसी बहादुरी पर, जिसमें दूसरों पर निर्ममता हो। बहादुरी तो वह हो सकती है, जिसमें किसी की जान बचाई जाए। जिसमें किसी की जान ली जाए, वह बहादुरी कैसे हो सकती है।

क्या यह धरती केवल मनुष्य के लिए बनाई गई है? हरगिज नहीं। धरती पर प्राकृतिक संतुलन में सभी जीवों का अहम स्थान है। सभी जीव, जंगल, वनस्पतियां, हवा, पानी आदि हैं, तभी तो धरती है। वन्य जीव ना तो मनुष्य के दुश्मन हैं और ना ही उसके उपभोग की वस्तु। ये जीव मनुष्य के संगी हैं। हां कुछ जीव मानव बस्ती में

क्या यह धरती केवल मनुष्य के लिए बनाई गई है? हरगिज नहीं। धरती पर प्राकृतिक संतुलन में सभी जीवों का अहम स्थान है। सभी जीव, जंगल, वनस्पतियां, हवा, पानी आदि हैं, तभी तो धरती है। वन्य जीव ना तो मनुष्य के दुश्मन हैं और ना ही उसके उपभोग की वस्तु।

ना घुसें तो बेहतर है। लेकिन इसके लिए यह भी तो जरूरी है कि मनुष्य इन जीवों की बस्ती-जंगल में अतिक्रमण ना करे। मनुष्य जंगलों को अंधाधुंध काट कर कंकरीट के जंगल खड़े करके इसे अपनी उपलब्धि बताते हुए इतरा रहा है। कथित विकास की परियोजनाओं के लिए भी जंगलों को उजाड़ा जा रहा है। सडक़ों के किनारे खड़े पेड़ सडक़ों के चौड़ाकरण की भेंट चढ़ रहे हैं। ऐसे में हम देखते हैं कि बंदर व नीलगाय तक के रहने लायक जंगल नहीं रह गए हैं। बंदर बस्तियों में घुसते हैं तो बंदों को परेशानी होती है। नीलगाय फसलें चट करती हैं तो बंदे बंदूकें उठाकर मारने को दौड़ते हैं।

कभी खेतों में देखते थे तो पेड़ ही पेड़ नजर आते थे। अब खेतों में कईं-कईं किलोमीटर तक पेड़ों का नामोनिशान दिखाई नहीं देता। खेतों में लहलहाती फसलों पर कीटनाशकों व दवाईयों का अंधाधुंध छिडक़ाव किया जा रहा है और फसलों को जहरीला बनाने का खेल खेला जा रहा है। ऐसे में जब वन्य जीव बस्ती में आते हैं तो यह हश्र होता है, जैसा उस गोह का हुआ। कीड़े-मकोड़े आदि भोजन की तलाश में जब गलती से गोह गांव में चला गया तो वह खुद परेशान हो गया। ऐसे में अज्ञानता व डर के कारण लोगों ने जब उसे देखा होगा तो उसे जानलेवा मानकर उस पर टूट पड़े होंगे। जबकि सच्चाई यह है कि गोह जानबूझकर मनुष्य पर कभी हमला नहीं करता। ना ही यह जहरीला होता है। हां आत्मरक्षा के लिए अपने पंजों से वह मनुष्य को घायल जरूर कर सकता है। अन्य जीवों की तरह ही यह जीव भी प्रकृति चक्र को प्रत्यक्ष तौर पर मनुष्य को अप्रत्यक्ष तौर पर लाभ पहुंचाता है। अब कौन समझाए इन लोगों को, मास्साब जैसे सभी तो हैं नहीं। हां, हमारी तो यही कामना है कि मास्साब की मेहनत सफल हो और गोह की जान बचे।

* लेखक हरियाणा शिक्षा विभाग में एक प्राध्यापक हैं।

Quality & Trust for over 50 years

madhu
SINCE 1970

ISI MARKED

AN ISO/TS 22002-1:2009 FSSC
ISO 22000:2005 FSMS
ISO:14001:2015 EMS
ISO 18001:2007 OHSAS
CERTIFIED COMPANY
Approved by Export Inspection Council of India
fssai LIC. NO.1002064000103

•GHEE •MILK POWDER •SKIMMED MILK POWDER •INSTANT MILK MIX

HARYANA MILK FOODS LIMITED

HARYANA MILK FOODS LTD.

Milk Plant & Regd. Off.: Kaithal Road, Pehowa, Distt. Kurukshetra, Haryana - 136128
Tel. : 01741-230061, 230419 Fax : 01741-230348, GRAMS : HRYANMILK,
Email : hmflpehowa@gmail.com

Head Office : 78/3 Janpath, 2nd Floor, New Delhi - 110001
Tel Fax : 011-23738652, Email : hmfl2003@yahoo.com.in

तुम्हारे नाश का मानव यही पहला चरण होगा

आचार्य महावीर प्रसाद विद्यावाचस्पति

सुखद आकाश था
उन्मुक्त वायु सनसनाती थी
इसे दूषित बनाने में
तेरा ही आचरण होगा ॥

धरा तो उर्वरा थी
लहलहाती थीं यहां फसलें
घने जंगल कटे फिर –
क्यों न अब इसका क्षरण होगा ॥

कटे पर्वत, घटे जंगल।
फटी धरती घटा पानी,
घटाएं उमडना भूली
तेरा कैसा भरण होगा ॥

हुई मलवाहिनी नदियां
सुनामी बन रहा सागर
तुम्हारे नाश का मानव
यही पहला चरण होगा ॥

हिरण को समझ सोने का
उधर जो मारने निकले
तुम्हारे लोभ के कारण
इधर सीता हरण होगा ॥

तुम इक दिन खुद बुझालोगे
जो सूरज, चांद, तारों को
अन्धेरों में भटक कर वो
तेरा भीषण मरण होगा ॥

Courtesy:

MAHINDRA MACHINE WORKS

Deals in:
All Types of Textiles Machinery & Parts

Near Toll Plaza, Sector 18, Huda, Panipat - 132103
Mob: 87911-00009, 9354920275 (Whatsapp)
Email: mmw5467@gmail.com

नरेश कुमार शर्मा

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः

वृक्ष आदिकाल से ही मनुष्य के हितैषी रहे हैं।सभी प्रकार के वृक्ष और पेड़-पौधे मानव समाज के लिए सदैव ही उपयोगी रहे हैं। यही कारण है कि वृक्षो को मनुष्य का सच्चा मित्र कहा जाता हैं। वृक्ष हमसे कुछ न लेते हुए भी हमें बहुत कुछ देते हैं जो एक सच्चा मित्र ही कर सकता है। पेड़ हमारे सबसे अच्छे दोस्त हैं। वे हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हमें लकड़ी, कागज और जलाऊ लकड़ी देते हैं, जाहिर है उनके बिना हम नहीं रह सकते हैं। मनुष्य टिम्बर का उपयोग मकान, ट्रेन के डिब्बे, बड़े बक्से और विभिन्न प्रकार के उपकरण आदि बनाने में करता है। इसी तरह, बिना कागज के हमारे लिए जीवन कठिन हो सकता है, क्योकि अध्ययन और लेखन के लिए कागज बहुत नितांत आवश्यक है। गांवों में लोग भोजन पकाने से लेकर घर, झोपड़ी, गाड़ियां और कृषि उपकरण बनाने के लिए लकड़ी का उपयोग करते हैं। पेड़ हमें फल-फूल, भोजन, गोंद और दवा भी देते हैं। वे जीवन की सुंदरता को भी जोड़ते हैं। बगीचों, सार्वजनिक पार्कों, सड़क एवं राजमार्गों पर पेड़ों के बिना इन में से एक भी मनोरंजन एवं उपयोग के स्थल आकर्षक नहीं हो सकते हैं। हमें ऑक्सीजन और अच्छे स्वास्थ्य के लिए पेड़ों की जरुरत है। पेड़ प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी मदद करते हैं: वे कार्बन डाइ ऑक्साइड को अवशोषित करके हमारे पर्यावरण में सुधार करते हैं। पेड़ वर्षा का कारण तो बनते ही हैं, ये जमीन के नीचे जल संसाधनों की रक्षा भी करते हैं। वृक्षों से ही बाढ़ और सूखे की रोकथाम होती है। इसलिए, हमें अधिक से अधिक पेड़ आरोपित करके उनको बचाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। सरकार और सामाजिक कल्याण समितियों को भी एक आंदोलन शुरू करके अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाने की मुहिम शुरू करनी चाहिए। समाज को उन व्यक्तियों के लिए पुरस्कार घोषित करने चाहिए जो अधिक पेड़ लगाते एवं उनकी रक्षा करते हैं।

हम पेड़ों को ऑक्सीजन प्रदान करने में उनकी अद्वितीय भूमिका के कारण और हमारे सांस लेने वाली वायु की गुणवत्ता को सुधारने के लिए प्राय: उनको इस ग्रह के फेफड़े कहते हैं। हालांकि, पेड़ तो अपनी जड़ों की प्रणाली के माध्यम से पानी की रक्षा करने, जलवायु को नियंत्रित करने, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट को सीमित करने और वन्यजीवन को भी सहारा प्रदान करते हैं। प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के माध्यम से, पेड़ वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड को हटा कर ऑक्सीजन छोड़ते हैं। प्राणवायु प्रदान करके पेड़ वस्तुत: पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने की एक कुंजी हैं। अमेरिकी कृषि विभाग द्वारा प्रदान की गई जानकारी के मुताबिक एक एकड़ जंगल के पेड़ वातावरण से छह टन कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा अवशोषित करके पेड़ उस प्रदूषित हवा से चार टन ऑक्सीजन पैदा करते हैं। ऑक्सीजन यह मात्रा पूरे वर्ष भर के लिए 18 लोगों की जरूरत के बराबर है। इस से भी बढ़ कर पेड़, झाडियों और घास के मैदानों की वायु की गुणवत्ता में भी सुधार करते हैं क्योंकि वे धूल के कणों और प्रदूषकों- जैसे कार्बन मोनोऑक्साइड,

सल्फर डाइऑक्साइड तथा हवा से नाइट्रोजन डाइऑक्साइड को हटाने में सक्षम हैं। जब हमारी जलवायु की बात आती है तो इसके लिए भी पेड़ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे सूर्य की धूप, तपिश, बारिश और हवा के प्रभाव को कम देते हैं। उदाहरण के लिए, पेड़ की पत्तियां सूर्य की गर्मी के प्रति ढाल के रूप में कार्य करती हैं और गर्म महीनों के दौरान वे तापमान को भी निम्न स्तर पर रखने में मदद करती हैं। इसी तरह, वे तेज बर्फीली हवाओं, वर्षा, बर्फ और ओलावृष्टि की ठण्ड से रक्षा करके चीजों को गर्म रखने में भी मदद करती हैं। सबसे बढ़कर, पेड़ धरती के पारिस्थितिक तंत्र जिसमें वे मौजूद हैं, के लिए भी आवश्यक हैं। एक परिपक्व पेड़ एक नए लगाए गए पेड़ की तुलना में लगभग 70 गुना अधिक प्रदूषण को हटाता है। पेड़ ध्वनि प्रदूषण को कम करने के लिए ध्वनि अवरोधक के रूप में कार्य करते हैं।पेड़ पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र की तीव्रता को बनाए रखने में मदद करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। दुनिया के तीन-चौथाई लोग अपनी ऊर्जा के मुख्य स्रोत के रूप में लकड़ी पर निर्भर हैं। एक एकल वृक्ष प्रति वर्ष लगभग 260 पाउंड ऑक्सीजन का उत्पादन करता है।

पेड़ भू-क्षरण से लड़ने के लिए दूर तक पहुंचने वाली अपनी जड़ों के द्वारा मिट्टी को जकड कर रखते हैं और भू-क्षरण से लड़कर उस भूमि की गुणवता को बरक़रार रखते हैं। पेड़ वर्षा के जल को अवशोषित करके एक तो, भू-जल के स्तर को बढ़ाते हैं जिससे भूजल की आपूर्ति के रिचार्ज होने में मदद मिलती है दूसरे, पेड़ों की वजह से बाढ़ पर भी रोक लगती है और रसायनों के जल-स्त्रोतों में जाने पर रोक लगती है। इतना ही नहीं, पेड़ों से गिरने वाली पत्तियां उत्कृष्ट खाद बनाती हैं, जो मिट्टी को समृद्ध करती है।

तृणं चाहं वरं मन्ये नरादनुपकारिणः ।

घासो भूत्वा पशून्पाति भीरुन् पाति रणांगणे ॥

'जो तृण बनकर पशु का रक्षण करता है,और रणांगण में दूसरों को बचाता है, उन तृण के तुकडों को मैं, अपकारी मानव से ज़ादा श्रेष्ठ समज़ता हूँ।' जंगलों में रहने वाले अनेक शाकाहारी जानवर जैसे जिराफ, हाथी, कोअला और ज़ेबरा आदि अपने पोषण के लिए पेड़ों की पत्तियां खाते हैं और अपने आहार को पूरा करते हैं। आमतौर पर शुष्क मौसम के दौरान जब पौधे, घास और झाड़ियाँ सूख जाती हैं, तो पेड़ ही काम आते हैं। उनके फल पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों, भालू-बंदरों और आदमियों तक के लिए एक विनम्रता एवं प्रकृति की एक अनुपम भेंट हैं। कई प्रकार के पेड़-पौधों के फूलों को भी बंदर खाते हैं, जबकि उनके फूलों का रस एवं मधु तो चमगादडों सहित अन्य कई कीड़ों और पक्षियों का पसंदीदा भोजन है। पेड़ों पर अनेक प्रजातियों के पक्षी तो अपना घोंसला बना कर रहते ही हैं, दूसरे सैकड़ों प्रकार के

Sainsons
Paper Industries Ltd.

"We are one of the largest manufctures of MG Kraft Paper (Agro Based) of North India. We save the environment by manufacturing the papers (Semi Craft Papers) from the waste & residues of the agriculture".

Sh. Pradeep Saini
Managing Director

Our clints includes :

Hindustan Unilever Limited · ITC Limited · Coca-Cola · Frito Lay · WRIGLEY

Our product is also being sold in various parts of the country through dealers and distributors.

Sainsons
Paper Industries Ltd.

Works :
Plot No. 5, Village Bakhli (Pehowa), Distt. Kurukshetra (Haryana)
Tel. : 01741-220919, 220986, 221615, Fax : 01741-221086,
Email : info@sainsons.net, Web. : www.sainsons.net

Delhi Office :
506, 3rd Floor, Sharp Bhawan, Commercial Complex, Azadpur, Delhi - 110 033
Tel : 011-27677608

जीव-जंतु भी पेड़ों पर अपना आशियाना या घर बना कर रहते हैं। पेड़ों की पत्तों से ढकी शाखाओं पर गिलहरी जैसे कई प्रकार के जानवर और छोटे- छोटे पक्षी अपने आप को शिकारियों की पहुंच से सुरक्षित रख पाते हैं। बड़े जानवर भी उन्हें अपने आराम के स्थानों के रूप में उपयोग करते हैं। छोटे या मध्यम आकार के जानवर जैसे कि बन्दर, चिंपैंजी, कोआला और तेंदुए तो मूल रूप से पेड़ों पर ही रहते हैं, जबकि बड़े जानवर जैसे शेर, हाथी, भैंस और गैंडे चिलचिलाती गर्मी से बचने के लिए पेड़ों को बाकी जगहों की तरह इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा, वे ऐसे स्थान हैं जहां छोटे जानवर आसन्न हमलों से खुद को सुरक्षित रखने के लिए शरण लेते हैं। अधिकांश शिकारी पेड़ों पर नहीं चढ़ सकते हैं। लेकिन पेड़ों की छिपी हुई शक्तियाँ यहीं समाप्त नहीं होती हैं। पेड़ हमारे समाज के लिए पोषण के साथ-साथ आर्थिक गतिविधि का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। पेड़ हमें पौष्टिक फल देते हैं; उनके पत्तों, जड़ों और फूलों से लेकर उनका रेजिन तक का उपयोग फार्मास्युटिकल्स और अन्य औद्योगिक उद्देश्यों के लिए कई तरीकों से किया जा सकता है। ज्ञात हो, क्विनिन और एस्पिरिन जैसी दोनों दवाइयां पेड़ों की छाल के अर्क से बनाई जाती हैं। क्विनिन सिनकोना नामक एक सदाबहार छोटे से पेड़ अथवा झाडी से जबकि एस्पिरिन विलो पेड़ की पत्तियों से प्राप्त की जाती है। रबर के पेड़ (हेविया ब्रासिलिएन्सिस) जैसे कुछ पेड़ों की भीतरी छाल में रबर का मुख्य घटक लेटेक्स होता है। टिम्बर बेशक एक सबसे मूल्यवान सामग्री है। पेड़ भवन निर्माण, फर्नीचर निर्माण, विभिन्न प्रकार के औजार, खेल के साधनों एवं उपकरणों और हजारों घरेलू सामान के लिए लकड़ी प्रदान करते हैं।

लकड़ी का गूदा कागज बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। लकड़ी अभी भी दुनिया की लगभग आधी आबादी के द्वारा खाना पकाने और हीटिंग के लिए उपयोग की जाती है। पिछले 50 वर्षों में वन उत्पादों विशेष रूप से प्रसंस्कृत लकड़ी के उत्पादों में जैसे चीरने वाली इमारती लकड़ी, लुगदी, बोर्ड और पैनल आधारित लकड़ी का व्यापार काफी बढ़ गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन का अनुमान है कि पिछले तीन दशकों में लकड़ी आधारित पैनल व्यापार में 800 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

लेकिन पेड़ों का एक सामाजिक मूल्य भी है: पेड़ हरेक समुदाय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हमारी सड़कें, पार्क, खेल के मैदान और बैकयार्ड यानि पिछवाड़े सभी पेड़ों से अटे पड़े हैं, ताकि वहां एक शांतिपूर्ण सौंदर्य से भरपूर वातावरण बनाया जा सके। पेड़ शहरी सेटिंग्स में प्राकृतिक तत्वों और वन्यजीव वास को लाकर हमारे जीवन के स्तर को बढ़ाते हैं। ज्ञात हो, शहरी क्षेत्र बहुत विकसित होते हैं, जहां मानव संरचनाओं जैसे

Courtesy:

AKS RUGS CO.

(A house of Floor Covering)

Adj. Sector - 29, HUDA, Panipat-132106
Ph.: 91 180 2672187/88, 2663212
Email: info@aksrugs.com | Web: www.aksrugs.com

घर, वाणिज्यिक भवन, सड़कें, पुल और रेलवे आदि का घनत्व होता है, वहां पर पेड़ हमारे जीवन के स्तर को बढाते हैं। कई मोहल्लों में बहुत पुराने पेड़ शान से खड़े हैं, जो शहर के गौरव के बड़े स्रोत और ऐतिहासिक स्थलों के रूप में समाज की सेवा करते हैं। पेड़ों ने हमारे चित्रों, साहित्य और कविताओं को प्रेरित किया है। जब कोई पेड़ों से हमारे रिश्ता को मानता है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने हमारे जीवन के लगभग हर पहलू पर प्रभाव डाला है। और इतना ही नहीं, इतनी सदियों बाद भी पेड़ हमें प्रेरित करने के लिए वह रिश्ता जारी रखें हुए हैं, लेकिन साथ ही पेड़ आज भी स्वयं अध्ययन की एक वस्तु हैं। इससे पेड़ों में हमारी लगातार रुचि रही है जिस के कारण हमें हाल ही में, पेड़ों की छिपी हुई शक्तियों के बारे में रहस्योद्घाटन हुआ है।

कार्डिफ़ विश्वविद्यालय के एक नए शोध से पता चला है कि पृथ्वी पर उगे पहले पेड़ों की संरचना भी सर्वाधिक जटिल है। उक्त शोध दुनिया के सबसे पुराने लगभग 374 मिलियन वर्ष पुराने वृक्ष के जीवाश्म पर हुआ है जिसके तने के जटिल संजाल को देख कर वैज्ञानिक हतप्रद हैं। वैज्ञानिक अभी भी पेड़ में छिपी अद्वितीय शक्तियों के बारे में सबूत इकट्ठा कर रहे हैं। ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय में वन और संरक्षण विज्ञान विभाग में वन पारिस्थितिकी की प्रोफेसर सुज़ैन सिमरद का मानना है कि हरेक पेड़ भूमिगत हर दूसरे पेड़ से जुड़ा हुआ है। यह साबित करने के लिए प्रोफेसर सुज़ैन सिमरद ने पुराने पेड़ों के साथ उसी प्रजाति के एक ही तरह के पेड़ लगाए और बाद में अन्य प्रकार के पेड़ भी लगाए। पुराने 'मदर' पेड़ों ने अपने परिजन पेड़ों के नेटवर्क के साथ सहजीवी संबंध के चलते बड़े पैमाने पर वहां अन्य पेड़ो को आबाद कर लिया और उन्हें जमीन के नीचे अधिक कार्बन भेजा। उन्होंने अपनी खुद की जड़ों की बढ़ने की प्रतियोगिता को भी कम करके अपने 'बच्चे' पेड़ों के लिए उस स्थान को कुहनी से ढकेल दिया। प्रोफ़ेसर ने एक घायल मदर पेड़ के तने के नीचे और उसके पास लगी पौध के परिजन पेड़ों के सहजीवी संबंध नेटवर्क के साथ से कार्बन का पता लगाने के लिए आइसोटोप ट्रेसिंग का इस्तेमाल किया। फ्लोरेंस विश्वविद्यालय की अंतर्राष्ट्रीय प्रयोगशाला में प्लांट न्यूरोबायोलॉजी के प्रोफेसर स्टेफानो मेन्कसो ने भी इसी तरह के विचार व्यक्त किए हैं। वे आश्वस्त है कि पौधे संज्ञानात्मक और बुद्धिमान हैं लेकिन जानवरों की तुलना में बहुत अधिक धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, इसलिए हमें कई दिनों तक पौधे की गतिविधि को रिकॉर्ड करना होगा। उनका काम इंगित करता है कि साथ खड़े लोबिया के पौधों में संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा होती है। उदाहरण के लिए, वे जब ऊपर की ओर बढ़ते दो लोबिया के पौधों के साथ प्रयोग कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि उन पौधों के बीच एकमात्र सहारा पाने की प्रतिस्पर्धा होती है। परन्तु,

जब एक बार एक पौधा सहारा पाने तक पहुँच गया है तो दूसरे पौधे को तुरंत उसका अहसास हो जाता है और वह दूसरा विकल्प खोजने की कोशिश करता है। यह आश्चर्यजनक है, क्योंकि इससे यह साबित होता है कि पौधे अपने परिवेश, भौतिक वातावरण और अन्य पौधों का व्यवहार के बारे में जानते हैं। प्रोफेसर स्टेफानो मेन्कसो का मानना है कि यह चेतना का एक रूप है। पेड़ कई पक्षियों और जानवरों के घर हैं। अधिकांश पक्षी पेड़ों पर घोंसले बनाते हैं, जहां वे निवास करते हैं और अंडे देते हैं। पेड़ों के बिना, ये प्यारे जीव कहीं जाने के लिए फंसे होंगे। अधिकांश जंगली जानवर जंगलों में रहते हैं। वन उनके निवास स्थान हैं, जहां वे रहते हैं, शिकार करते हैं, चरते हैं, बच्चों को जन्म देते हैं और उन को पालते हैं।

जंगलों के बिना, इन जानवरों में से कईयों का अस्तित्व ख़त्म हो जाएगा और प्रकृति की खाद्य श्रृंखला भी बाधित होगी। हम मनुष्यों के लिए, पेड़ एक शांत वातावरण प्रदान करते हैं, जहां हम शांति और चैन चाहते हैं। जब हम शहरी जीवन से व्याकुल महसूस करते हैं, तो जंगल हमें एक ऐसा स्थान प्रदान करते हैं जहां हमें सकून मिलता है। दुनिया भर के सभी मनोरंजक पार्कों को देखें, उन सभी में एक चीज समान है- वहां सब जगह पेड़ हैं। हमारा पेड़ों के पास होना चिकित्सकीय रूप से हमें शांति प्रदान करता है। पेड़ों वाले स्थान स्वाभाविक रूप से शांत और नीरव होते हैं, क्योंकि पेड़ों को शोर कम करने के लिए जाना जाता है। इसलिए वे स्थान ध्यान और आत्म- अन्वेषण के लिए सही स्थान हैं। पेड़ सुंदर भी होते हैं। वे हमारे परिवेश को सुंदर बनाते हैं। वसंत और शरद ऋतु के दौरान, कुछ पेड़ जैसे ट्यूलिप ट्री, चेरी, सदर्न मैगनोलिया, गोल्डन चैन ट्री, क्रेप मर्टल और फ्लावरिंग डॉगवुड खिलते हैं। वे कई रंगों और आकार के फूल पैदा करते हैं जो अद्भुत खुशबू और प्राकृतिक दृश्य उत्पन्न करते हैं। पेड़ों की सुंदरता को पक्षियों, कीड़ों और कृन्तकों की विभिन्न प्रजातियां जो मीठी आवाज़ पैदा करते हैं और पेड़ों पर एक नज़ारा उत्पन्न करते हैं, बढ़ा देते हैं। जब हम उन्हें अपने घरों के पास लगाते हैं, तो वे बच्चों के खेलने के लिए सैरगाह वाले स्थानों के रूप में कार्य करते हैं। पेड़ हमारे आस-पास प्राकृतिक मीठी सुगंध भी पैदा करते हैं। भारत सहित दुनिया के कुछ हिस्सों में धार्मिक पूजा में उदाहरण के लिए, पेड़ों का उपयोग किया जाता है। भारत में पेड़ों की पूजा काफी आम है और पालनकर्ता पेड़ों के साथ कई देवताओं की बराबरी करते हैं। उदाहरण के लिए, भगवान विष्णु का प्रतिनिधित्व पीपल के पेड़ द्वारा किया जाता है। यह भी माना जाता है कि भगवान बुद्ध ने पीपल के पेड़ के नीचे अपना ज्ञान प्राप्त किया था और इसलिए इसे काटना मना है। नीम का पेड़ देवी दुर्गा का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि नारियल का पेड़ देवी लक्ष्मी का प्रतीक है।

पेड़ मूल रूप से हमारे पर्यावरण के संरक्षक हैं। सबसे पहले, वे हवा में नमी जारी करके वातावरण में मध्यम तापमान में मदद करते हैं। नमी बादलों की एक ढाल बनाती है जो हमें सूरज से अत्यधिक गर्मी से बचाती है। पेड़ भी हाइड्रोलॉजिकल चक्र की सुविधा प्रदान करते हैं। वे मिट्टी से पानी को अवशोषित करते हैं और इसे वायुमंडल में छोड़ देते हैं, जो फिर बारिश के रूप में वापस गिरता है। यही कारण है कि कई पेड़ों वाले स्थानों में बहुत अधिक वर्षा होती है। वे विंडब्रेकर के रूप में भी कार्य करते हैं। पेड़ हवाओं की गति और बलों को कम करते हैं, और परिणामस्वरूप वे हमें हवा से संबंधित नुकसान से जुड़ी लागतों से बचाते हैं। वे पानी के अपवाह के कारण मिट्टी के कटाव को भी कम करते हैं।

पेड़ की जड़ें जमीन की गहराई तक होती हैं, जो बहते पानी को कठोर, कठोर और अभेद्य बनाती हैं। पत्तियां मिट्टी में समान रूप से वर्षा को वितरित करने में मदद करती हैं। पेड़ मिट्टी की उर्वरता में भी सुधार करते हैं। मिट्टी से पोषक तत्वों को छोड़ने के लिए सड़ने की प्रक्रिया के माध्यम से, पेड़ों से मृत पत्ते, गिरी हुई शाखाओं और छाल को तोड़ दिया जाता है। इन पोषक तत्वों को फिर से बढ़ने और स्वस्थ होने के लिए मिट्टी में पेड़, पौधों और सूक्ष्मजीवों द्वारा अवशोषित किया जाता है पेड़ हमारे सबसे अच्छे दोस्त हैं। वे मित्र के प्रकार हैं, जो हमें वह सब कुछ देते हैं जो उन्हें मिला और बदले में कुछ भी नहीं मिलने की उम्मीद है। दुर्भाग्य से, हम अपनी उदारता का दुरुपयोग अपने लालच द्वारा करते हैं, हमारे कार्यों के नतीजों पर ज्यादा विचार किए बिना। पेड़ों के साथ हमारी सांठ-गांठ वास्तव में एक तरफा है। हम पेड़ों पर निर्भर हैं, वे हम पर निर्भर नहीं हैं। पेड़ हमारे जीवन का हिस्सा और पार्सल बन गए हैं।

वे लगभग हर जगह, स्कूलों में, काम पर, घर में, उद्योगों में, अस्पतालों में और कहीं भी आप अपने प्राकृतिक रूप में और साथ ही उनके डेरिवेटिव में सोच सकते हैं। तो, पेड़ क्या हमारे जीवन में इतना महत्वपूर्ण बनाता है कि हम उनके बिना नहीं रह सकते हैं?

* लेखक हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अम्बाला स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में सहायक पर्यावरण अभियंता हैं।

पेड़ लगाए हर इन्सान,
मां वसुंधरा देती वरदान।

वृक्ष फैलाते हरियाली,
जीवन में लाते खुशहाली।।

Oasis Commercial Pvt. Ltd.

Village: Jatwar, Nr. Shahazadpur, Tehsil: Naraingarh,
Ambala Cantt – 134 201 Mobile : +91-9896984333

Energy Solutions for the Nation

At IndianOil, we are committed to offering tailor-made energy solutions for our billion-plus customers by deploying product and process innovations, technology and service interventions, and focussed R&D.

Backed by the core values of *Care*, *Innovation*, *Passion* and *Trust*, we are constantly on the quest for new and smarter ways to fuel the nation's growth.

We welcome 2019 as the YEAR OF SOLUTIONS, as a year-long reminder to keep this spirit of quest alive.

इंडियनऑयल
IndianOil

2021
डिजिटलीकरण का वर्ष
प्रक्रियाओं का नवीकरण